Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

जे सूर करें पचखांण, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतब जनम सुधारियो।।

शूरवीर आदमी जो संकल्प करता है उसे एकधार निभाता है। उसका जीवन धन्य हो जाता है।
– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 44 • 03 अगस्त - 09 अगस्त 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 01-08-2026 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

आओ, मुनि महावीर! भावी नेतृत्व का मंगलोदय

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण ने मुनि महावीरकुमार को युवाचार्य घोषित कर तेरापंथ को सौंपा स्वर्णिम भविष्य

लाडनूं, 27 जुलाई 2026

तेरापंथ की राजधानी लाडनूं और जैन विश्व भारती की धरा मानो स्वयं धन्य हो उठी थी। आकाश प्रफुल्लित था, सुहाना मौसम अपनी मृदुलता बिखेर रहा था। दशोदिशाएँ रोमांचित थीं, प्रकृति जैसे मौन तोड़कर किसी ऐतिहासिक क्षण की साक्षी बनने को आतुर थी। जन-जन का रोम-रोम पुलकित था। सर्वसिद्धा तिथि, आद्य अनुशास्ता आचार्य भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के समापन का पावन अवसर और तेरापंथ धर्मसंघ की समूची चेतना एक ही बिंदु पर एकाग्र थी।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के समापन समारोह में युगप्रधान, तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने एक ऐसी ऐतिहासिक घोषणा की, जिसने तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान को आश्वस्त और भविष्य को आलोकित कर दिया। अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी को युवाचार्य पद पर नियुक्त कर उन्होंने भिक्षु परंपरा की अखंड नेतृत्व-श्रृंखला को नई ऊर्जा और नई दिशा प्रदान की।

यह केवल एक मनोनयन नहीं था, बल्कि अनुशासन, मर्यादा, साधना और सेवा की उस गौरवशाली परंपरा का पुनर्पुष्ट उद्घोष था, जो ढाई शताब्दियों से अधिक समय से तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान रही है।

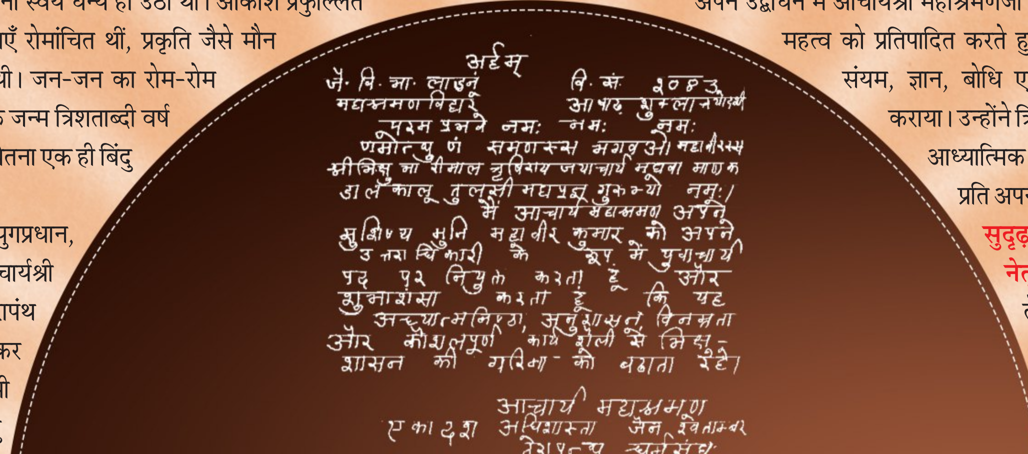

अर्हम्
जै. वि. भा. लाडनूं वि. सं. २०८३
महाश्रमण विहार आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी
परम प्रभवे नमः नमः नमः
णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स
श्रीभिक्षु भारीमाल ऋषिराय जयाचार्य मघवा माणक
डालं कालू तुलसी महाप्रज्ञ गुरुभ्यो नमः।
मैं आचार्य महाश्रमण अपने
सुशिष्य मुनि महावीर कुमार को अपने
उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य
पद पर नियुक्त करता हूं और
शुभाशंसा करता हूं कि यह
अध्यात्मनिष्ठा, अनुशासन, विनम्रता
और कौशलपूर्ण कार्यशैली से भिक्षु-
शासन की गरिमा को बढ़ाता रहे।
आचार्य महाश्रमण
एकादश अधिशास्ता जैन श्वेताम्बर
तेरापन्थ धर्मसंघ
२७.७.२०२६

इतिहास के स्वर्णिम क्षण का शुभारंभ

अपने उद्बोधन में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उत्तरज्झयणाणि आगम में वर्णित विनय के महत्व को प्रतिपादित करते हुए आद्य अनुशास्ता आचार्य भिक्षु के त्याग, संयम, ज्ञान, बोधि एवं संघ-निर्माण की गौरवगाथा का स्मरण कराया। उन्होंने त्रिशताब्दी संवत्सर के विविध चरणों में सम्पन्न आध्यात्मिक उपक्रमों का उल्लेख करते हुए गुरु परंपरा के प्रति अपनी कृतज्ञ श्रद्धा व्यक्त की।

सुदृढ़ व्यवस्था का आधार : एक आचार्य के नेतृत्व की अनुशासित परंपरा

तेरापंथ की आचार्य परंपरा का उल्लेख कराते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु प्रथम आचार्य हुए। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य भारमलजी स्वामी को नियुक्त किया। इसके बाद यह परंपरा आगे से आगे चलती रही। हमारे नवम अनुशास्ता परम पूजनीय आचार्यश्री तुलसी हुए और उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हुए। इस प्रकार हमारे धर्मसंघ में एक आचार्य के नेतृत्व की परंपरा चली आ रही है।

आज मैं धर्मसंघ के सामने एक विशेष बात कहना चाहता हूं। आचार्यश्री भिक्षु ने हमें मर्यादाएं दीं, व्यवस्था दी। उत्तरवर्ती आचार्यों ने उन मर्यादाओं और व्यवस्थाओं के आधार पर धर्मसंघ की सुरक्षा की और विकास किया। अतीत में आचार्य दशक भी सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझ पर भी ध्यान दिया, मुझे दायित्व सौंपा। मैं उस दायित्व को यथायोग्य निभाता आ रहा हूं और आगे भी यथायोग्य, यथासंभव उसे निभाता रहूंगा।

शेष पृष्ठ 02 पर...

बोधि दिवस पर लाडनूं की माटी ने नव-इतिहास रचाया ।
तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण की करुणा का वरदान है पाया ॥
मुख्यमुनि के विनय-समर्पण से चमका संघ का ध्रुव-तारा ।
चतुर्विध धर्मसंघ नमन करे, गूंजे युवाचार्य का जयकारा ॥

27 जुलाई 2026 का दिन बना तेरापंथ के इतिहास का अमर दिवस

आचार्यश्री भिक्षु का तपोदीप्त अतीत, आचार्यश्री महाश्रमणजी का युगप्रवर्तक वर्तमान और युवाचार्यश्री महावीर के रूप में आश्वस्त भविष्य...

श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाईम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 अगस्त - 09 अगस्त 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

आओ, मुनि महावीर!...
(पृष्ठ 01 का शेष)

धर्मसंघ की सुरक्षा और निरंतरता के लिए उत्तराधिकारी की घोषणा

अपने उत्तराधिकारी की घोषणा के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने कहा कि आज आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की संपन्नता के इस पावन अवसर पर आचार्य परंपरा और अपने गुरुओं को नमन करते हुए, मैं अपने उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा करना चाहता हूं।

आचार्यश्री भिक्षु ने जो पंथ चलाया, वह आगे बढ़ा। उस परंपरा में आचार्यश्री तुलसी हमारे नवम गुरु हुए। उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी हुए। मुझे गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। उन्होंने मुझे आगे बढ़ाया। गुरुदेवश्री तुलसी ने मुझे महाश्रमण के रूप में और आगे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझे युवाचार्य के रूप में दायित्व प्रदान किया। अब मेरा भी मनोभाव बना है कि मैं अपने युवाचार्य की घोषणा कर दूं।

हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखाजी, साध्वी वर्याजी और विशाल साध्वी समुदाय है। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी सहित अनेक संत यहां उपस्थित हैं और बाहर भी मुनिगण हैं। समणी समुदाय है तथा श्रावक-श्राविका समाज है। हम सभी तेरापंथ के एक बैनर के नीचे हैं। हमारी कामना है कि इस धर्मसंघ में साधना अच्छी चलती रहे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप का अच्छा विकास होता रहे। हम दूसरों की भी जितनी संभव हो, आध्यात्मिक और धार्मिक सेवा करने का प्रयास करते रहें।

तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली युवाचार्य परंपरा

तेरापंथ की गौरवशाली युवाचार्य परंपरा का उल्लेख करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि हमारे धर्मसंघ में सर्वोच्च नेतृत्व एक आचार्य का होता है। आचार्यश्री भिक्षु ने आचार्य भारमलजी स्वामी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। आचार्य भारमलजी स्वामी ने रायचंदजी स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। आचार्य रायचंदजी स्वामी ने जीतमलजी स्वामी को अपना युवाचार्य और उत्तराधिकारी बनाया। श्रीमद् जयाचार्य ने मघराजजी स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। आचार्यश्री मघवागणी ने माणक मुनिश्री को अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसके बाद धर्मसंघ ने डालचंदजी स्वामी को अपना आचार्य स्वीकार किया। आचार्यश्री डालगणी ने मुनिश्री कालूरामजी स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। आचार्यश्री कालूगणी ने मुनि तुलसी को युवाचार्य बनाया। आचार्यश्री तुलसी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को युवाचार्य बनाया और अपनी विद्यमानता में ही उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया।

"आओ मुनि महावीर" — ओम अर्हम से गूँज उठा सम्पूर्ण पंडाल

ज्यों-ज्यों आचार्यश्री नव इतिहास सृजन की तरफ बढ़ रहे थे, विशाल जनसमुदाय का मन एक अदृश्य प्रतीक्षा में स्थिर हो चुका था। सैंकड़ों साधु-साध्वियां, समणीवृंद, हजारों श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ पूर्ण एकाग्रता से गुरुदेव के प्रत्येक शब्द को सुन रहे थे

और फिर वह क्षण आया— "आओ, मुनि महावीर!"

इतना सुनते ही मानो पूरा पंडाल एक साथ स्पंदित हो उठा। "**ॐ अर्हम्**" की गगनभेदी ध्वनि से वातावरण गुंजायमान हो गया। अनेक श्रद्धालुओं की आँखें हर्षातिरेक से सजल हो उठीं। संत, साध्वी, श्रावक-श्राविकाएँ भावविभोर हो गए। यह केवल घोषणा नहीं थी, यह गुरु द्वारा भविष्य के नेतृत्व को सौंपे गए विश्वास का अनुपम क्षण था।

"आओ, मुनि महावीर!
अब मैं, आचार्य महाश्रमण, अपने सुशिष्य मुनि महावीरकुमारजी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूं"

हमारी व्यवस्था के अनुसार आचार्य जब उचित समझें, अपने गुरु भाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर सकते हैं। आचार्य के उत्तराधिकारी के रूप में घोषित व्यक्ति युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित होता है।

घोषणा के उपरांत पवित्र धवल उत्तरीय का अर्पण

पूज्य गुरुदेव ने पवित्र धवल उत्तरीय स्वयं धारण कर नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर को ओढ़ाते हुए कहा कि युवाचार्य के रूप में उत्तरीय धारण करने की हमारी परंपरा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझे उत्तरीय ओढ़ाया था। यह उत्तरीय एक प्रकार से भावी दायित्व के अर्पण का प्रतीक है। यह उत्तरीय शुक्ल है, सफेद है। हमारी शुभाशंसा है कि युवाचार्यजी भी इसी प्रकार निर्मलता के साथ धर्मशासन की सेवा करते रहें और भिक्षु शासन को अध्यात्म, आचार, सद्गुणों और ज्ञान के माध्यम से आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें। युवाचार्य पद सेवा का दायित्व है। इसकी शुभाशंसा मैंने लिखित रूप में भी प्रदान कर दी है।

तेरापंथ धर्मसंघ की जो व्यवस्था और परंपरा चली आ रही है, उसके अनुसार भविष्य के उत्तराधिकारी की नियुक्ति का कार्य मैंने आज सम्पन्न किया है। युवाचार्यश्री महावीरकुमारजी धर्मसंघ की मर्यादाओं, परंपराओं और सिद्धांतों को आगे बढ़ाते रहें। वे अध्यात्म, अनुशासन, विनय, ज्ञान और सेवा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति करते रहें तथा भिक्षु शासन की गरिमा को बढ़ाते रहें—यही मेरी मंगलकामना और शुभाशंसा है।"

इस ऐतिहासिक घोषणा के पश्चात् जो दृश्य उपस्थित हुआ, उसने मानो सम्पूर्ण भिक्षु परंपरा का सजीव दर्शन करा दिया। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने श्रीअंग पर धारण की हुई अमल-धवल पछेवड़ी स्वयं उतारी और अत्यंत वात्सल्य एवं विश्वास के साथ उसे नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर के कंधों पर ओढ़ा दी। वह केवल एक उत्तरीय का अर्पण नहीं था, वह गुरु के तप, त्याग, अनुशासन, मर्यादा और उत्तरदायित्व की निर्मल परंपरा का हस्तांतरण था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो संत कबीर की अमर वाणी "**ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया**" उस क्षण साकार होकर उपस्थित हो गई हो। धवल चादर के साथ गुरु ने अपने विश्वास, संस्कार, साधना और भिक्षु शासन की भावी जिम्मेदारी भी अपने उत्तराधिकारी को समर्पित कर दी।

नवनियुक्त युवाचार्यश्री का वर्धापन

नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर का वर्धापन करते हुए साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, संत समाज की ओर से वरिष्ठ मुनि श्री धर्मरुचिजी तथा समणीवृंद की ओर से समणी मधुरप्रज्ञाजी ने भावपूर्ण अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं।

गीतों में उमड़ा उल्लास, भावों में झलका भविष्य का विश्वास

साध्वीवृंद एवं संतवृंद ने आशुरचना के माध्यम से भावपूर्ण गीतों की प्रस्तुति देकर मंगलकामनाएं अर्पित कीं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष महेन्द्र नाहटा ने संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज की ओर से आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की। आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति, लाडनूं के अध्यक्ष प्रमोद बैद एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा ने भावपूर्ण अभिव्यक्तियां प्रस्तुत की।

परंपरा अक्षुण्ण, भविष्य सुरक्षित

आचार्यश्री महाश्रमणजी की इस ऐतिहासिक घोषणा ने स्पष्ट संदेश दिया कि तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा केवल वर्तमान तक सीमित नहीं, बल्कि उसका भविष्य भी उतना ही सुदृढ़, अनुशासित और आध्यात्मिक मूल्यों से आलोकित है।

भिक्षु से महाश्रमण तक प्रवाहित नेतृत्व की यह अखंड धारा अब युवाचार्य श्री महावीरकुमारजी के रूप में भावी दिशा प्राप्त कर चुकी है। तेरापंथ समाज ने इस ऐतिहासिक क्षण को केवल देखा ही नहीं, बल्कि उसे अपनी भावनाओं में संजो लिया—जहाँ गुरु का विश्वास, शिष्य का समर्पण और धर्मसंघ का भविष्य एक ही मंच पर साकार हो उठा।

कार्यक्रम के प्रारंभ में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी संवत्सर के समापन के विविध आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक उपक्रम सम्पन्न हुए। (जन्म त्रिशताब्दी कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में प्रस्तुत की जा सकेगी।)

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

युवाचार्य मनोनयन : चित्रमय झलकियां

सच्चाई से समझौता नहीं... यही था स्वामी भिक्षु का असली वैभव! : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
25 जुलाई, 2026

आद्य अनुशास्ता महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अंतर्गत 'भिक्षु चेतना वर्ष' के चतुर्थ चरण एवं तीन दिवसीय समापन समारोह का गरिमामय शुभारंभ लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती की सुधर्मा सभा में हुआ। अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में कार्यक्रम का प्रारंभ महामंत्रोच्चार से हुआ। मुनिवृंद ने 'भिक्षु अष्टकम्' तथा साध्वीवृंद ने 'प्रज्ञा गीत' का संगान किया।

> ज्ञान के साथ जब निडरता जुड़ती है... तभी समाज में नए युग का जन्म होता है।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु का अनूठा ज्ञान वैभव और प्रखर प्रतिभा–

१. आगम स्वाध्याय से सिद्धांत निर्माण : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'आचार्य भिक्षु का ज्ञान वैभव' विषय पर अमृत देशना देते हुए कहा कि आगम पढ़ना एक बात है, परंतु गहराई में उतरकर आगम वाणी के प्रति अटूट श्रद्धा रखना विशेष बात है। स्वामी भिक्षु ने सिद्धांतों और साध्वाचार के सभी निष्कर्ष आगमों का गहन अध्ययन करके ही निकाले।

२. ३८,००० गाथाओं का विराट साहित्य : आचार्य भिक्षु में ज्ञानावरणीय कर्म का अद्भुत क्षयोपशम था। उनके द्वारा रचित ३८,००० गाथा प्रमाण साहित्य उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, प्रतिभा और विराट प्रज्ञा का स्पष्ट प्रमाण है।

३. अनोखी दृष्टान्त शैली व निडरता : स्वामी भिक्षु की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी दृष्टान्त (उदाहरण) शैली, जिससे वे कठिन से कठिन आध्यात्मिक बात को भी श्रोता के गले आसानी से उतार देते थे। ज्ञान वैभव के साथ-साथ उनमें अद्भुत निडरता थी; वे अपनी बात को निर्भीकता और स्पष्टता से रखते थे।

कंटालिया प्रवास और जयाचार्य का साहित्य–

१. भिक्षु चेतना वर्ष की यात्रा : पूज्य प्रवर ने एक वर्ष पूर्व शुरू हुए चेतना वर्ष का स्मरण कराते हुए बताया कि स्वामी भिक्षु की जन्मस्थली 'कंटालिया' में १३ रात्रियों का प्रवास और महाचरण का ऐतिहासिक आयोजन संपन्न हुआ था।

२. भिक्षु जस रसायण : धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक स्वामी भिक्षु का प्रभाव जयाचार्य रचित 'भिक्षु जस रसायण' में स्पष्ट झलकता है। आचार्यश्री ने सभी साधु-साध्वियों को स्वामी भिक्षु के साहित्य का गहन अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

श्रद्धांजलियों व गीतों से गुंजायमान हुई सुधर्मा सभा–

साध्वीवर्या जी का वक्तव्य : साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशा जी ने स्वामी भिक्षु को यशस्वी, वर्चस्वी और तेजस्वी महापुरुष बताते हुए कहा कि उनके जीवन में संयम-साधना के साथ ज्ञान के क्षयोपशम और पुरुषार्थ का अद्भुत संगम था।

तो मेरा ज्ञान 'चारा' है.....

जब आचार्य भिक्षु बूंदी में विराजमान थे, तब सवाई राम जी ओस्तवाल उनसे धर्म चर्चा करने आए। चर्चा के दौरान जब सवाई राम जी बहुत आवेश में आ गए और लंबी बहस करने लगे, तो आचार्य भिक्षु ने उन्हें शांत करने के लिए एक बहुत ही सटीक दृष्टांत दिया।

दृष्टांत:
उन्होंने कहा कि जैसे पशुओं के सामने जरूरत से ज्यादा चारा डाल देने पर वे उसे खाने के बजाय बिखेर देते हैं, वैसे ही बहुत सारी बातें एक साथ सुन लेने पर उन्हें हृदयंगम (आत्मसात) करना कठिन होता है।

विनोदपूर्ण उत्तर:
जब सवाई राम जी ने नाराज होकर पूछा कि क्या उन्हें 'पशु' समझा गया है, तो आचार्य भिक्षु ने बड़ी सौम्यता से उत्तर दिया: 'यदि आप पशु हैं, तो मेरा ज्ञान 'चारा' है।' यह सुनकर सवाई राम जी का सारा आवेश शांत हो गया और वे निरुत्तर हो गए। यह घटना आचार्य भिक्षु की हाजिरजवाबी और कठिन परिस्थितियों को सुलझाने की उनकी अद्भुत शैली को दर्शाती है।

साहित्य ही संस्कृति की आत्मा और सच्चा मार्गदर्शक है : आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु चेतना वर्ष' के द्वितीय दिवस पर 'आचार्य भिक्षु का साहित्य संसार' विषय पर अमृत देशना—'ज्ञान के बिना साहित्य में गांभीर्य नहीं आता

लाडनूं।
26 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता स्वामी भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष (भिक्षु चेतना वर्ष) के त्रिदिवसीय समापन समारोह के दूसरे दिन का गरिमामय शुभारंभ वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वीवृंद ने 'प्रज्ञागीत' का संगान किया।

मोक्ष का मार्ग और राग-द्वेष का क्षय : सर्वज्ञता का प्रकाश–

पूज्य आचार्यश्री ने 'एकांत सुख वाला मोक्ष कौन पा सकता है?' प्रश्न का समाधान देते हुए फरमाया कि जिसके राग और द्वेष पूरी तरह क्षीण हो जाते हैं, उसका अज्ञान दूर हो जाता है। राग-द्वेष के मिटते ही आत्मा में सर्वज्ञता और परम ज्ञान का प्रकाश फैलता है।

आचार्य भिक्षु का अगाध साहित्य संसार–

१. ज्ञान और साहित्य का संबंध : आचार्यश्री ने फरमाया कि बिना गहरे ज्ञान के साहित्य में गंभीरता नहीं आ सकती। जिससे दिशा और मार्गदर्शन मिले, वही उत्तम ग्रंथ है।

२. राजस्थानी भाषा का विराट साहित्य : स्वामी भिक्षु और श्रीमद् जयाचार्य महान साहित्यकार थे। पिछले ५ शताब्दियों में राजस्थानी भाषा में पद्य परिमाण साहित्य की जितनी विशाल रचना जयाचार्य और स्वामी भिक्षु ने की, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। स्वामी जी ने आचार, तत्त्वज्ञान और आख्यान साहित्य की अविरल सरिता प्रवाहित की।

> सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, पर आत्मा का कल्याण केवल निर्भीक साधना से ही संभव है।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. प्रमुख रचनाएं और 'भिक्षु वाणी' : आचार्यश्री ने स्वामी जी की प्रसिद्ध रचनाओं—'आचार की चौपई', 'बारह व्रत', 'इन्द्रिय वाढ़ी' व 'कालवाढ़ी' का उल्लेख करते हुए कहा कि लाडनूं का साहित्य भंडार अद्वितीय है। 'भिक्षु वाणी' ग्रंथ का स्वाध्याय और उसे कंठस्थ करने का प्रयास हर साधक को करना चाहिए। (शेष पेज 12 पर)

में वनवास में जाता हूं.....

कैकेयी ने राजा दशरथ से अपने पुराने वचनों को याद दिलाते हुए वरदान मांगा कि वे अपने पुत्र भरत को उत्तराधिकार सौंपें। जब राजा दशरथ ने यह बात श्री राम को बताई, तो राम ने बिना किसी संकोच या विरोध के इसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने अत्यंत सहज भाव से कहा कि राम और भरत में कोई अंतर नहीं है, इसलिए वे खुशी-खुशी भरत को राज्य सौंपने के लिए तैयार हैं। जब भरत को उत्तराधिकार के बारे में पता चला, तो उन्होंने इसे लेने से स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा कि उनके बड़े भाई राम के रहते वे कभी भी राज्य का पद स्वीकार नहीं करेंगे। जटिल स्थिति को सुलझाने के लिए, श्री राम ने स्वयं वनवास जाने का निर्णय लिया। उन्होंने पिता से आज्ञा मांगी ताकि भरत के मन में कोई संकोच न रहे और वह राज्य का दायित्व संभालने के लिए प्रेरित हो सके। इस प्रकार इस प्रसंग द्वारा यह सीख दी गई है की सच्ची बुद्धिमत्ता 'त्याग' और 'औदार्य' में निहित है न कि अपने स्वार्थ की सिद्धि में।

शपथ ग्रहण एवं व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का संयुक्त आयोजन

सिकंदराबाद।

सिकंदराबाद के सिख विलेज रोड स्थित श्री आनंद जैन भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी (ठाणा-2) के पावन सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 107वें जन्मदिवस पर श्रद्धापूर्ण समारोह, 'युवाओं का प्रणाम – आचार्य महाप्रज्ञ के नाम', तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह तथा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'नई सोच, नई उड़ान' का भव्य आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

जेन्द्र बोथरा द्वारा जारी विज्ञप्ति अनुसार कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली के मंगलाचरण के साथ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीतिका प्रस्तुत की गई।

प्रारंभ में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मुनि दीप कुमारजी ने इस अवसर पर कहा कि 'आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ज्ञान के उदय कोष थे।' साधारण परिवेश में जन्मे संयम जीवन स्वीकार किया। शिक्षा प्राप्ति की और विनय एवं समर्पण से एक दिन वे असाधारण बन गए। उन्होंने ध्यान की गहरी आराधना की, आगमों का कुशल संपादन किया और भाष्यों का भी निर्माण किया। कितने साहित्य का लेखन किया। उपशम की साधना उनके जीवन का आदर्श थी। शपथ ग्रहण समारोह के संदर्भ में मुनिश्री ने कहा कि आज अनेक युवा अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य दायित्व स्वीकार करेंगे, किंतु सदैव स्मरण रखें कि पद सम्मान नहीं, जिम्मेदारी है।

कुर्सी प्रतिष्ठा नहीं, पुरुषार्थ प्रतिष्ठा देता है। माला सम्मान नहीं देती, सेवा सम्मान देती है। तालियाँ महान नहीं बनातीं, त्याग महान बनाता है। मुनि काव्य कुमारजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि 'प्रेरणा के महासागर का नाम आचार्य महाप्रज्ञ है। साधारण से असाधारण बनने की अनुपम कहानी हैं आचार्य महाप्रज्ञ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद केवल एक संगठन नहीं, बल्कि युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व विकास एवं समाज सेवा का सशक्त मंच है। उन्होंने युवाओं से बड़े लक्ष्य निर्धारित करने, समय का सदुपयोग करने, आत्मविश्वास विकसित करने तथा सकारात्मक सोच के साथ जीवन में आगे बढ़ने का आह्वान किया। व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'नई सोच, नई उड़ान' में उन्होंने संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, समय प्रबंधन एवं आत्ममूल्यांकन जैसे विषयों पर व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

निवर्तमान अध्यक्ष राहुल गोलछा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष विनोद दूगड़ को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर अभातेयुप उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, शाखा प्रभारी संदीप मुथा, युवा गौरव अशोक बर्मेचा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा नमिता सिंघी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषाल तथा अणुव्रत समिति की मंत्री रीटा सुराणा ने अपने शुभकामना संदेश प्रेषित की।

कार्यक्रम का प्रभावी संचालन मंत्री नीरज सुराणा एवं सहमंत्री जिनेन्द्र बैद ने किया। अंत में मंत्री श्री नीरज सुराणा ने मुनिश्री, समस्त अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। समारोह श्रद्धा, प्रेरणा, संकल्प एवं संगठनात्मक ऊर्जा का अनुपम संगम बनकर सम्पन्न हुआ।

आत्म साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान

अष्ट दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर सानंद हुआ सम्पन्न

बैंगलोर।

प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केंद्र परिसर मे आठ दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर सानंद सम्पन्न। इस शिविर मे कोल्हापुर ,इचलकरंजी, नागपुर, चेन्नई, तथा बंगलौर के एवं लंदन मे प्रवासित बोध गया के एक सदस्य के साथ कुल 22 सदस्यों ने भाग लिया। शिविर के प्रथम दिन धनराज छाजेड एवं सरिता छाजेड द्वारा प्रेक्षा गीत का मंगल संगान किया गया।

शिविर संयोजिका एवं प्रेक्षा प्रशिक्षिका वीणा बैद ने सभी का स्वागत किया तथा शिविरार्थियो को प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा का संकल्प कराया,एवं प्रेक्षा चर्या के सुत्रो के बारे मे बतलाया। चेतना केंद्र के सुरम्य वातावरण मे आयोजित इस शिविर मे प्रशिक्षण व साधना के क्रम मे प्रेक्षाध्यान, आसन प्रणायाम, शरीरविज्ञान, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, समताल श्वासप्रेक्षा, समवर्ति श्वासप्रेक्षा, योगिक क्रियायें, गमन योग,अर्हम् जप एवं मंगल भावना का प्रायोगिक एवं विवेचनात्मक वाख्यानमाला का क्रम एवं जिज्ञासा समाधान का विशेष क्रम नियमित रुप से चला।

प्रशिक्षण का मुख्य दायित्व बैंगलोर से प्रेक्षा प्रशिक्षक वीणा बैद तथा चेन्नई से साधना परमार एवं भारती मुथा ने निभाया,शिविर के दौरान अपनी अपनी व्यक्तिगत कला के प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण सत्र आयोजित किया गया समापन सत्र मे उपस्थित चेतना केन्द्र के मैनेजर सुशील सिपानी ने शिविर के महत्व पर अपने विचार रखे।

विजयनगर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा महिमा पटावरी ने सभी शिविरार्थियों को ज्ञान ध्यान की प्रेरणा देते हुए साधना के पथ पर आगे बढ़ने हेतु सभी शिविरार्थियों को बधाई दी।शिविरार्थियो को प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रमाणित सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सरिता छाजेर ने प्रस्तुत किया।

शिविर के अंतिम सत्र का संचालन छतर सिंह मालू ने किया।शिविर व्यवस्था सहयोगी के रूप में महेंद्र श्री श्रीमाल, पुष्पा चौरडिया एवं प्रवीण उत्तम गन्ना का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्राइड एंड प्रतिभा कार्यक्रम

कोई भी जन्म से बड़ा या छोटा नहीं होता

गांधीनगर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गांधीनगर के तत्वावधान में बैंगलोर ज्ञानशाला ने प्राइड एंड प्रतिभा कार्यक्रम का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी के सानिध्य में किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्री जी द्वारा नवकार मंत्र के मंगल उच्चारण से हुई। मंगलाचरण में प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका का संगान किया।साध्वी श्री ने आचार्य महाप्रज्ञजी के वे जन्मदिवस पर जाप का प्रयोग करवाया। साध्वीश्रीजी ने कहा की नत्थू से महाप्रज्ञ तक की ये यात्रा जिसमें महाप्रज्ञजी ने अनेकों ऐसे आयाम संघ को दिए।पूरा समाज गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के प्रति नतमस्तक है कि उनकी पहली नजरों से महाप्रज्ञजी का जीवन भी निखरा एवं हम साधु संतों को ही नहीं अपितु श्रावक श्राविकाओं का भी जीवन, भविष्य उज्जवल हुआ । फिर साध्वीश्रीजी ने कहा कि एक बार पूछा गया परिषद से की आपके यहां कोई बड़ा आदमी जनमा है क्या? तो वहां के लोगों ने कहा कि हमारे यहां तो बड़े आदमी नहीं जन्मते, सब बच्चे ही जन्मते है।

कहने का तात्पर्य कोई भी जन्म से बड़ा या छोटा नहीं होता, अपनी कार्य कुशलता से महान बनता है आज के इस अवसर पर बच्चों की सुंदर प्रस्तुति रही।कार्यक्रम में मोटीवेशनल स्पीकर दीपक शिंदे का विशेष सत्र रहा जिसकी सभी ने भूरी भूरी प्रशंसा की। दीपक शिंदे ने कहा कि बच्चों के विकास के लिए उनका संस्कारी होना जरूरी है। जैन धर्म एकमात्र ऐसा धर्म है जिसमें बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला जैसा उपक्रम है। अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला भेजना चाहिए। संगायक कमल सेठिया भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए और चैत्य पुरुष जग जाये गीतिका का संगान किया। तत्पश्चात बच्चों ने श्लोक,योग, इंस्ट्रूमेंट्स, मेंटल मैथ्स , ब्लाइंड फोल्ड आदि के द्वारा अपना टैलेंट प्रस्तुत किया।

सभा अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष विनोद कोठारी आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबर

श्री उत्सव का भव्य आयोजन

इरोड। महिला मण्डल द्वारा निर्देशित इरोड तेरापन्थ महिला मण्डल द्वारा आयोजित श्री उत्सव का भव्य आयोजन स्थानीय तेरापन्थ भवन में हुआ। महिला मण्डल अध्यक्षा समता जीरावला द्वारा स्वागत भाषण, उपाध्यक्ष पिंकी वैदमुथा द्वारा श्री उत्सव की की देख रेख एवं महिला मण्डल की सभी बहनों द्वारा व्यवस्था और मंत्री कविता सिंघी द्वारा आभार और सभी स्टाल धारकों का भी अभिनंदन किया गया। सभी प्रकार के वस्त्र, इमिटेशन ज्वैलरी, फैंसी राखी, कॉस्मेटिक, पेय पदार्थ, आइसक्रीम आदि के 31 आकर्षिक स्टाल थे। लगभग 700 लोगो की संख्या रही।

शपथ ग्रहण समारोह

सिटी लाइट, सूरत। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिश्री डा. मदनकुमारजी के सुपावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिटीलाइट में तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद का शपथग्रहण समारोह रखा गया। सभा के नवनियुक्त अध्यक्ष महेंद्र गांधी मेहता और उनकी पूरी टीम को शपथ महासभा महामंत्री विनोद बैद एवं निवर्तमान अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने दिलाई। तेयुप के नवनियुक्त अध्यक्ष अमित सुराणा और उनकी पूरी टीम को शपथ अभातेयुप महामंत्री सौरभ पटावरी एवं निवर्तमान अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने दिलाई।

संस्कारक श्री विजयकांत खटेड़,श्री कांतिभाई मेहता आदि ने पूर्ण मंत्रोचार के साथ जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न करवाया। तेरापंथी महासभा न्यासी संजय सुराणा, महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश डाकलिया एवं फूलचंद छत्रावत, महामंत्री विनोद बैद, संगठन मंत्री निर्मल गोखरू, अभातेयुप परामर्शक राजेश सुराणा, प्रबुद्ध विचारक देवेंद्र सोलंकी, प्रवृति सलाहकार प्रकाश छाजेड़, शाखा प्रभारी नीलेश टेबा एवं अभातेयुप परिवार की उपस्थिति रही।

श्री उत्सव का भव्य आयोजन

तिरुप्पुर। अभातेमम के तत्वावधान में तिरुपुर महिला मंडल द्वारा श्री उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि MLA वी. सत्यभामा और विनोद बांठिया रहे। अध्यक्षा सरिता श्यामसुखा द्वारा सभी का स्वागत किया गया, मंत्री रेखा सिंघवी ने मंडल के चारों आयामों - सक्षम नारी, समृद्ध राष्ट्र योजना, आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजन, आदर्श परिवार योजना और श्री उत्सव के उद्देश्य की विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया श्री उत्सव का उद्देश्य सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और सशस्त बनाना है। मुख्य अतिथि द्वारा महिला मंडल की सक्रियता कि सराहना करते हुए कहा की प्रत्येक महिला के कौशल को पहचान एवं प्रोत्साहन मिलना चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर की दिशा ने आगे बढ़ सके। श्री उत्सव के इस भव्य आयोजन में लगभग ४६ स्टॉल लगाये गए और लगभग १००० से आधिक लोगो ने २ दिन के इस आयोजन में भाग लिया । कार्यक्रम का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष श्वेता कोठारी द्वारा किया गया।

श्री उत्सव का आयोजन

कोयंबटूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रीउत्सव का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष रूपकला भंडारी ने पधारे सभी अतिथियों का स्वागत किया पत्रकार किशोर, प्रिंटिंग में सपोर्ट के लिए निशांत बैद एवं अधिकतम पास वितरित करने के लिए सुमन सुराणा का सम्मान किया गया । धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल मंत्री रेखा मरोठी के द्वारा किया गया । कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री उत्सव संयोजिका बबीता गुनेचा ने किया एंव सह संयोजिका के रूप में चित्रा गोलछा एवं वंदना पारख एवं एडवर्टाइजमेंट के लिए रुचिका मालू का योगदान सराहनीय रहा।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी सूरत प्रवासी स्वः निर्मल कुमार पारख के सुपुत्र विकाश कुमार पारख का शुभ पाणिग्रहण संस्कार नोखा निवासी स्वः श्रीचन्द बैद की सुपुत्री सरिता जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, धर्मचंद श्यामसुख, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** तरपाल (उदयपुर) निवासी सूरत प्रवासी ललित लीला जैन के सुपुत्र जिगर जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार चुरू निवासी सूरत प्रवासी जगत सरिता बांठिया की सुपुत्री नम्रता बांठिया के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, सुशील गुलगुलिया, बजरंग बैद सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **सूरत।** फाजिल्का निवासी सूरत प्रवासी प्रांजल ॐ प्रकाश जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** सेमड़ निवासी सूरत प्रवासी प्रियांश रमेश मेहता के नूतन क्लीनिक का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, हिम्मत बंब ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **उधना।** पारस बाबूलाल आंचलिया बावलास निवासी एवं उधना प्रवासी के नूतन गृह प्रवेश का मंगलमय कार्यक्रम 301, वर्धमान अपार्टमेंट, मेन रोड,उधना में जैन संस्कार विधि से संस्कारक नेमीचंद कावड़िया, अनिल सिंघवी एवं कमलेश डांगी द्वारा विधिवत संपन्न हुआ।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** तारानगर निवासी एवं पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी भरत कुमार लुनिया के नूतन गृह के प्रवेश का मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक अनूप गंग ने गार्डन एनक्लेव, देश बंधु नगर, बागीहाटी कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा किया गया।

श्री उत्सव 2026' में उमड़ा जनसैलाब, महिला स्वावलंबन को मिला सशक्त मंच

नई दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वी दिल्ली द्वारा मेसिना बैंक्वेट, सीबीडी ग्राउंड, विश्वास नगर में 'श्री उत्सव 2026–एक कदम स्वावलंबन की ओर' का भव्य आयोजन अत्यंत गरिमापूर्ण, सुव्यवस्थित एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर जैन समाज के साथ अन्य समाज की 115 महिला उद्यमियों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन एवं बिक्री का मंच प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन दिल्ली की उप महापौर डॉ. मोनिका पंत ने रिबन खोलकर किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा अध्यक्ष बिमल बैंगानी, प्रख्यात उद्योगपति जोधराज बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की परामर्शक सायर बैंगानी, आदि की उपस्थिति रही।

प्रेरणा गीत के संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंडल अध्यक्षा मंगला कुण्डलिया ने 'श्री उत्सव' की अवधारणा एवं महिला स्वावलंबन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। मंडल की बहनों ने स्वावलंबन की उपयोगिता दर्शाती प्रेरक नाटिका प्रस्तुत की। महिलाओं द्वारा तैयार हस्तनिर्मित उत्पादों और विभिन्न घरेलू व्यंजनों के स्टॉल्स आकर्षण का केंद्र थे। इस प्रदर्शनी में real व इमिटेशन ज्वेलरी, footwear, राखियां, सजावटी सामान, एक्सेसरीज, साड़ियां, कपड़े, bakery products आदि अनेकों विभिन्न प्रकार के सामान एक ही छत के नीचे थे। कार्यक्रम संयोजिक प्रेम भंसाली, विजयलक्ष्मी दूगड़, प्रमिला डागा ने इस कार्यक्रम की आयोजना और संयोजन में अथक श्रम का नियोजन किया। मंच संचालन मंत्री दीपिका नाहटा ने किया। आभार प्रेम भंसाली ने किया।

तेरापंथ युवक परिषद का शपथ ग्रहण समारोह

कांदिवली।

तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन कांदिवली में किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़ व अभातेयुप सहमंत्री 2 अंकुर लुणिया ने करवाया। विजय गीत का संघान तेयुप टीम ने किया। मंगलाचरण पलक हिरण ने गीत'जय महाप्रज्ञ गुरूवर की' के द्वारा किया। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा अध्यक्ष मिठालाल धाकड़ ने किया। इस अवसर पर जैन संस्कार विधि से संस्कारक सौरभ दुधेड़िया, पारसमल दुगड़, शान्तिलाल कोठारी ने विधि विधान से मंगल भावना यंत्र की स्थापना कर तेयुप नवनिर्वाचित अध्यक्ष आशीष श्री श्रीमाल व टीम को मंगल मंत्रोच्चार से शपथ ग्रहण करवाया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी ने नवगठित टीम को बधाई दी। ZEE बिजनेस डायरेक्टर व युवक रत्न अनिल सिंघवी ने नवगठित टीम को बधाई देते हुए कहा की कांदिवली से मेरा घनिष्ठ नाता है मैं आपके साथ हूं। संयम सुपर मेराथन के बेनर का अनावरण तथा शपथ ग्रहण तक 61 नये मेंबर जोड़ने के बेनर का अनावरण पदाधिकारियों द्वारा हुआ। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन विनीत सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विमल धाकड़ ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
03 अगस्त - 09 अगस्त 2026

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

तेरापंथ के राम : भिक्षु स्वाम

● साध्वी रौनकप्रभा ●

भूमिका

आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी के अवसर पर भिक्षु को पढ़ने, सुनने और समझने का अच्छा अवसर मिला। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने एक बार अपने प्रवचन में फरमाया। उत्तराध्ययन के पन्द्रहवें अध्ययन और आचार्य भिक्षु के जीवन की समानताओं का प्रस्तुतिकरण हो सकता है उनकी प्रेरणा से मैंने एक छोटा सा प्रयास किया है।

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सूत्र केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि साधक के जीवन का आदर्श पथप्रदर्शक है। इसमें एक परिपक्व भिक्षु के गुणों, आचरण, मानसिक परिष्कार और आध्यात्मिक ऊँचाइयों का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन मिलता है। इन लक्षणों को पढ़ते समय सहज ही प्रश्न उठता है कि क्या इतिहास में कोई ऐसा महापुरुष हुआ है जिसके जीवन में ये सभी गुण प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हों?

आचार्य भिक्षु का जीवन इसी प्रश्न का सजीव उत्तर है। उन्होंने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, उन्हें पहले स्वयं अपने जीवन में जिया। उनके जीवन की अनेक घटनाएँ उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित परिपक्व भिक्षु के लक्षणों का मूर्त उदाहरण बनकर सामने आती हैं। यह केवल आचार्य भिक्षु की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि यह दिखाना है कि उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित आदर्श किसी कल्पना का विषय नहीं हैं; वे आचार्य भिक्षु के जीवन में पूर्णतः चरितार्थ हुए हैं।

१. 'मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं' — सम्यक् धर्म को स्वीकार कर उसका आचरण करना

आचार्य भिक्षु का प्रारम्भिक धार्मिक जीवन गच्छवासी परम्परा में प्रारम्भ हुआ। उन्होंने अनेक मतों और विचारधाराओं का अध्ययन किया, केवल परम्परा का अनुसरण नहीं किया। गहन विवेक और अध्ययन के बाद जिनधर्म को स्वीकार किया। गृहस्थ रहते हुए भी पत्नी के साथ ब्रह्मचर्य का पालन प्रारम्भ कर दिया और विक्रम संवत् १८०८ मार्गशीर्ष कृष्णा द्वादशी को मुनिदीक्षा ग्रहण कर जीवनपर्यन्त उस धर्म का अक्षुण्ण पालन किया। उनके लिए धर्म केवल स्वीकार करने की वस्तु नहीं था, बल्कि जीवन का आचरण था।

१. उज्जुकडे — ऋजुता और सरलता

आचार्य भिक्षु का जीवन ऋजुता से परिपूर्ण था। कुछ लोगों ने उनसे कहा भिखण जी! आपके वैराग्य,चरित्र निष्ठा और महान विद्वता से हम बहुत प्रभावित हैं आप वस्त्र रखना छोड़ दे तो हम सब आपके शिष्य बन जाए ।आचार्य भिक्षु ने ऋजुता से कहा- श्रावकों! मैंने श्वेतांबर शास्त्रों के आधार पर दीक्षा ली है वंहा वस्त्र रखने में दोष नहीं ,जिस दिन दिगंबर के शास्त्रों में श्रद्धा होगी तो कपडे छोड़ने में संकोच नहीं ।यह थी आचार्य भिक्षु की ऋजुता।

यह उत्तर बताता है कि उनके निर्णय लोकप्रियता पर नहीं, बल्कि आगम पर आधारित थे।

२. अकामकामे— विषय-वासना से मुक्त

गृहस्थ जीवन में रहते हुए ही आचार्य भिक्षु ने ब्रह्मचर्य का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया था। पत्नी के देहावसान के पश्चात् दूसरी शादी का प्रस्ताव आया, किन्तु उन्होंने उसे स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत धारण कर लिया। यह केवल बाहरी त्याग नहीं था, बल्कि मन की पूर्ण विरक्ति का परिचायक था।

३. वेयविया— आगम का ज्ञाता

दीक्षा के पश्चात् आचार्य भिक्षु ने आगमों का अत्यन्त गम्भीर अध्ययन किया। प्रत्येक आगम का बार-बार स्वाध्याय किया। किसी भी विवाद या शंका का समाधान वे व्यक्तिगत मत से नहीं, बल्कि आगमिक प्रमाणों से करते थे , स्थानक वासी मुनि कुशलोजी और तिलोक जी ने आ.भिक्षु से कहा साधु को लड्डू आदि सरस पदार्थ तथा घी दूध आदि गरिष्ठ पदार्थ खाने नहीं कल्पते ।उसे कौन से बच्चे पैदा करने हैं ,जो एसी वस्तुएं खायें ?स्वामी जी ने कहा देवकी के पुत्रों ने गोचरी में मोदक (लड्डू)ग्रहण किये थे आगमों में वर्णन आया है, तब तुम कैसे कह सकते हो की साधु को लड्डू खाना नहीं कल्पता ? कुशलोजी - वे तो महापुरुष थे उनकी क्या तुलना हो सकती है ? स्वामी जी -ठीक है ठीक है तुम नहीं खा सकते ।जो महापुरुष होते हैं, वे तो अब भी खाते ही है इस तरह हर बार उनके निर्णय का आधार केवल आगम रहा। उनकी विद्वता का प्रमाण यह भी है कि बाद में दलसुख जी मालवनिया आदि अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया कि जैन आगमों की दृष्टि से उनका चिन्तन अत्यन्त समीचीन था।

४. अक्कोसवहम -विइत्तु धीरे — कठोर वचनों और विरोध में समभाव

उत्तराध्ययन का आदर्श भिक्षु अपमान, निन्दा और विरोध में भी विचलित नहीं होता।

आचार्य भिक्षु के जीवन में विरोधियों की संख्या अनुयायियों से भी अधिक थी। उन्हें धमकियाँ दी गईं, अपशब्द कहे गए, यहाँ तक कि नरक जाने तक की बातें कही गईं। किन्तु उन्होंने कभी क्रोध से उत्तर नहीं दिया।

१. चाहे मुख् देखने से नरक में जाने की बात हो,
२. तेरापंथी बनने वाले के पति की मृत्यु हो जाति हो।
३. पाली चातुर्मास में बाबेचा परिवार मूर्तिपूजक -जुलूस निकाला, भवन के सामने ढोल बजाने लगे, व्याख्यान में व्यवधान-श्रावक उत्तेजित- पर स्वामी जी ने कहा यह प्रतिमा को भगवान मानते हैं अतः या तो भगवान के सामने नाचते गाते हैं या भगवान के साधु के सामने तुम भला क्रुद्ध होकर इन्हें रोक क्यों रहे हो

एक व्यक्ति लगातार अपशब्द बोल रहा था। आचार्य भिक्षु ने शांत भाव से कहा—

भाई! दूर खड़े होकर बोल रहे हो, पूरी बात सुनाई नहीं देती। तुम जो कुछ कह रहे हो, मुझे लिख लेने दो ताकि मैं बाद में उसका शान्तिपूर्वक विचार कर सकूँ।

इस उत्तर ने विरोधी को भी निरुत्तर कर दिया। यह समत्व की अद्भुत मिसाल है।

तवस्सी -तपस्वी

आचार्य भिक्षु ने गृहस्थ जीवन से ही एकान्तर तप प्रारम्भ कर दिया था। दीक्षा के बाद चौविहार उपवास, आतापना और कठोर तपस्याएँ उनके जीवन का नियमित अंग बन गईं। भीषण गर्मी, लू और कठिन परिस्थितियाँ भी उनके तप में बाधक नहीं राओवरेयम चररिज्ज उत्तराध्ययन में कहा गया है कि साधु मोह के कारण अपने मार्ग से विचलित नहीं होता।

गृहत्याग के बाद जब उनके पूर्व गुरु ने लौट आने का दबाव बनाया, तब उन्होंने कहा—

'जिस दिन घर छोड़ा था, उस दिन मेरी माता भी रोई थीं; तब भी मैं आत्मकल्याण के लिए लौटा नहीं। अब मोहवश कैसे लौट सकता हूँ?'

यह कथन उनके वैराग्य और आत्मनिष्ठा का परिचायक है।

५. कोवियप्पा— आगम का परम अर्थ जानने वाला

आगम के वास्तविक मर्म को समझना ही परिपक्व भिक्षु का लक्षण है।

आचार्य भिक्षु ने तीन साध्वियों को दीक्षा के निवेदन पर-जैनागमो के नियमानुसार कम से कम तीन साध्वियां साथ रहना आवश्यक है ।

आचार्य भिक्षु को प्रत्येक नियम ओरअर्थ की जानकारी थी। 1848 मे माधोपुर -दो श्रावक अपनी बात पर अड़े स्वामी जी ने तत्काल आगम संदर्भ देते हुए कहा श्रावक के त्याग देश चरित्र पर आगम में पाँच भेद हैं उसमें देश चारित्र नहीं लिया है ।पूर्ण चारित्र अपेक्षित श्रावक में चरित्र आत्मा नहीं 'स्वामी जी ने आगम के प्रत्येक अर्थ को आत्मसात कर दिया था।

आचार्य भिक्षु ने हर निर्णय आगम के मूल अर्थ के आधार पर लिया। तीन साध्वियों की दीक्षा हो या श्रावक के चारित्र का प्रश्न, उन्होंने प्रत्येक निर्णय शास्त्रीय आधार पर दिया। उनके लिए आगम केवल अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि निर्णय का अंतिम प्रमाण था ।

६. अणुविग्गए— अपमान और भय से अप्रभावित

गालियाँ, धमकियाँ, मारपीट और उपसर्ग भी उनके धैर्य को डिगा नहीं सके। उन्होंने प्रत्येक परिस्थिति में जागरूकता और समता बनाए रखी। उनके भीतर प्रतिशोध का भाव कभी उत्पन्न नहीं हुआ।

७. सव्वओ विप्पमुक्के — राग-द्वेष और आसक्ति से मुक्

आचार्य भिक्षु न किसी व्यक्ति से विशेष आसक्त हुए और न किसी के प्रति द्वेष रखा। चाहे प्रिय शिष्य खेतसीजी हों या पूर्व गुरु, सिद्धान्तों के सामने उन्होंने किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया। अपने जीवन के अंतिम समय में भी उन्होंने स्वर्ग की कामना नहीं की बल्कि मोक्ष को ही अपना लक्ष्य बताया । शयन, आसन, पान, भोजन विविध प्रकार के खाद्य- स्वाद्य गृहस्थ यहाँ यह राणा पंत कि यह मेरा न दे ।कारण विशेष से मांगने पर भी इनकार कर तो प्रद्वेष न करे वह भिक्षु है ।आचार्य भिक्षु का जीवन सैनिक का सा जीवन था जीवन संग्राम के उस विजय योद्धा को संन्यस्त ।जीवन में बहुत वर्ष समस्याओं से घिरे रखकर बिताने पड़े।

पाँच वर्ष तक उन्हें बराबर आहार नहीं मिला। पाली में स्थान परिवर्तन दुकानें चेंज करा दी।

उदयपुर से निष्कासन -महाराणा ने उदयपुर से निष्कासन किया तब स्वामी जी के मन में द्वेष की भावना नहीं आयी।

नाथद्वारा मे निष्कासन - नाथद्वारा चातुर्मास -वर्षा कम हुई दोष स्वामीजी पे डाल दिया।

गोसाईं जी ने मुँहपट्टी वालों को निकलने के आदेश दिया। पाँच वर्ष तक रोटी नहीं मिली।

बिलाडा में तो समाज ने प्रतिबंध -जो भिखण जी को रोटी देगा उसे प्रत्येक रोटी पर ११सामयिक दंड पर स्वामी जी विचालित नहीं हुए।

तेरापंथ का नाम लेने पर घी सहित घाट भी ले ली बहनें कहती मुझे तो तेरापंथियों को देने की त्याग है ।

इस प्रकार आहार, पानी, स्थान की कठिनाई आई पर स्वामी जी न कभी अभावों में त्रस्त हुए और न भावों से बद्ध। जीवन में आए संग्राम पर विजय हासिल की।

आयामगं चेव जवोदणं च, सीयं च सोवीरज वोदगं च।
नो हीलए पिंडा नीरसं तु, पंत कुलाइ परिव्वए स भिक्खू।।

एक बार स्वामीजी ने अपने संयम और समता की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने केर (कैर) का अत्यन्त कड़वा पानी ताँबे के लोटे में भरवाया। सामान्यतः ऐसा पानी पीना कठिन होता है, परन्तु स्वामीजी ने यह सोचकर कि साधु को स्वाद-अस्वाद, रुचि-अरुचि और सुख-दुःख में समभाव रखना चाहिए, बिना किसी संकोच या विकार के उस पानी को पी लिया।

न्होंने यह सिद्ध किया कि साधक का उद्देश्य स्वाद की तृप्ति नहीं, बल्कि शरीर-निर्वाह और आत्म-साधना है। इस घटना से उनका वैराग्य, तप, इन्द्रिय-निग्रह और समभाव उजागर होता है तथा यह प्रेरणा मिलती है कि साधक को परिस्थितियों और स्वाद के आकर्षण से ऊपर उठकर आत्मकल्याण के मार्ग पर दृढ़ रहना चाहिए। सामान्य घरों -बिलाडा में रोटी पर प्रतिबंध लगाने पर स्वामी जी ने सामान्य घर अर्थात् खाती ,कुम्हार ,जाट सेवग महाजन सभी के घरों पर गोचरी जाते थे।

कंटालिया के भाल ने दुनिया को संवारा है

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

आर्य भिक्षु का जन्मोत्सव अन्तर उल्लास जगाएं
कल्लूशां के प्रांगण में अम्बर अमृत बरसाएं
दीपांजी के लाल को शत-शत नमन हमारा है
कंटालिया के भाल ने दुनिया को संवारा है
वसुधा का कण-कण हर्षित है नभ में रवि धंसाएं ॥1॥

बिगुल बजाया सत्य का, शिथिलाचार दूर भगा
आस्था का आलोक पा जिनशासन सौभाग्य जगा
उजला उजला जीवन दर्शन अरमानों में छाएं ॥2॥

तेरापंथ अनुशास्ता ने बहुमूल्य अवदान दिए
क्रांतिवीर सरताज ने नित-नए उन्मेष दिए
शांतिवीर सांवरिया स्वामी घट-घट में बस जाएं ॥3॥

कामकुंभ चिंतामणि कल्पवृक्ष की छांह मिली
भक्ति से दर पे आया जीवन की बगिया खिली
तेरापंथ अखिलेश को भावों की भेंट चढ़ाएं ॥4॥

अप्राणों का प्राण वह, अंधेरी ओरी बाबा
अत्राणों का त्राण वह, श्मशानों का वह बाबा
अशरण शरण सहायक प्रभु की बलिहारी हम जाएं ॥5॥

ढोला मुक्का भी मिला मुक्ति की इस राह में
हटे नहीं पीछे कभी आत्मशक्ति की चाह में
अन्तर्यामी अन्तर्ममी के शासन में समकित दीप जलाएं ॥6
नंदनवन में साध्वी पान बीकाणा मुस्काएं ॥

लय - जनम जनम का साथ है...

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

AcharyaBhikshu:Timelessin a Changing World

● Nikhil Banthiya, Bangalore ●

Change is perhaps the only certainty that time has ever known. Over the last three centuries, the world has transformed beyond recognition. Kingdoms have given way to nations, societies have evolved, and technology has reshaped every aspect of human life. Yet, amidst this relentless march of change, one question quietly lingers: Why does Acharya Bhikshu continue to inspire us even today?

Perhaps the answer lies in a simple truth. While the world around us has changed, the world within us has not. The reasons for our anger have changed, the objects of our greed have changed, and pride and deceit have found newer expressions. Yet the four kashayas—krodh (anger), maan (ego), maya (deceit), and lobh (greed)—continue to bind humanity just as they did centuries ago.

Many carried forward Lord Mahavira's teachings, Acharya Bhikshu stands apart for the exceptional clarity with which he understood and lived them. He recognized that while the world would continue to evolve, the path to overcoming the kashayas would remain unchanged. His life's mission was not to offer a new philosophy, but to preserve and exemplify the path shown by Lord Mahavira for generations to come.

His conviction was not confined to words; it was reflected in every decision he made. Deeply devoted to his Guru and respected for his scholarship, Acharya Bhikshu stood at a point where comfort, recognition and influence were well within reach. Yet, when his understanding of the Agamas led him to believe that the pat shown by Lord Mahavira demanded a different course, he chose fidelity to truth over personal certainty. His departure from the established order was not an act of rebellion, but an expression of spiritual integrity and unwavering commitment to principle.

Perhaps that is Acharya Bhikshu's greatest legacy. He did not merely establish a tradition; he left behind an enduring example of what it means to live the truth with courage. Three centuries later, his life continues to remind us that while the world may never stop changing, the human struggle against krodh, maan, maya and lobh remains the same. And as long as that struggle continues, the life and teachings of Acharya Bhikshu will continue to illuminate the timeless path shown by Lord Mahavira.

गुंज रहा है गगन धरा, भिक्षु -2 का नाद

● साध्वी संयमलता ●

इस भिक्षु जन्म त्रिसति का पूर्णाहूति दिन आज
'गुंज रहा है गगन धरा, भिक्षु -2 का नाद

प्रेक्षा विश्वभारती कोबा से मंगल शुरुवात हुई
जन्मभूमि कंटालिय महाचरण की अद्भुत बात हुई
चन्देरी सभा सुधर्मा मे भव्य समापन आज

भिक्षु के सिद्धान्त और दर्शन का चला प्रशिक्षण खूब
तेरापंथ बने मेरापथ वर्कशोप मे रहस्य गुड
हर तेरस धम्म जागरण, करोडो अरबों का जाप

भाष्यकार भिक्षु के जय ने किया प्रतिष्ठित भिक्षु को
महाप्रज्ञ तुलसी ने उजागर कियां तितिक्षु भिक्षु को
गणिवर श्री महाश्रमण ने किया त्रिशताब्दी आगाज

आज जमाना याद करे भिक्षु जज्बातों को
परवाह नही थी भुख प्यास निद्रा की जगाई रातो को
सरिताचर मे आतापन श्मसानों मे किया वास

भिक्षु तेरा बलिदान इस शासन हित वरदान बना
कोटि नमन
श्रद्धा से करे हम चरणों मे है महाश्रमण
सहस्राब्दी मने विभुवर को भक्तों की दिली आवाज

तर्ज : मेरे सर पर रख दो

आचार्य भिक्षु आत्मधर्म के यथार्थ व्याख्याकार थे

जयपुर।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक एवं सत्य के पुजारी आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र में भव्य आध्यात्मिक समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। 'आचार्य श्री भिक्षु को जाने व पहचाने' विषय पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु आत्मधर्म के यथार्थ व्याख्याकार थे। उन्होंने जिनवाणी के प्रति पूर्ण समर्पण रखते हुए सत्य का जो उद्घाटन किया, वह अद्वितीय और विलक्षण है। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु ने स्पष्ट रूप से बताया कि संसार और मुक्ति के मार्ग एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम का मेल संभव नहीं है, उसी प्रकार समाज धर्म और आत्मधर्म का भी कोई सामंजस्य नहीं हो सकता। जहाँ परपीड़न, मोह और भोग का पोषण होता है, वहाँ आत्मकल्याण संभव नहीं है।

मुनि संभव कुमार जी ने अपने संबोधन में कहा कि शुद्ध साध्य की प्राप्ति के लिए साधन का भी शुद्ध होना अनिवार्य है। आत्मशुद्धि तभी संभव है, जब मनुष्य के भाव और उसकी क्रिया दोनों पूर्णतः विशुद्ध हों।

संक्षिप्त खबर

मिशन दृष्टि 2026 का शुभारंभ

चेन्नई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (टीपीएफ) चेन्नई द्वारा आयोजित मिशन दृष्टि 2026 नेत्र परीक्षण एवं जागरूकता अभियान' का भव्य शुभारंभ जीएसएस जैन विद्यालय में मुनि डॉ. पुलकितकुमारजी एवं मुनि आदित्यकुमारजी के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रोटरी इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटेरियन डी. सुरेश जैन थे। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ चेन्नई के मंत्री सीए गौरव सुराणा ने किया। मुनि डॉ. पुलकितकुमारजी के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात टीपीएफ चेन्नई की अध्यक्षा प्रमिला जैन ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए टीपीएफ के 'शाइन' (एसएचआईएनई) दर्शन—स्पिरिचुअल, हेल्थ, इंटेलेक्चुअल सर्विसेज, नेटवर्किंग एवं एजुकेशन—पर प्रकाश डाला। अपने मंगल उद्बोधन में मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति को केवल नेत्र-ज्योति ही नहीं, बल्कि अध्यात्म, सेवा और उद्देश्यपूर्ण जीवन के प्रति भी व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।

श्री उत्सव 2026 का आयोजन

गंगाशहर। तेरापंथ महिला मंडल, गंगाशहर द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में आयोजित तीन दिवसीय 'श्री उत्सव 2026 – एक कदम स्वावलंबन की ओर' का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि मांडवी राजवी (सेक्रेटरी, DLSA) तथा अभातेममं की कोषाध्यक्ष ममता रांका ने उद्घाटन के साथ श्री उत्सव का शुभारंभ किया। महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम बोथरा ने अपने वक्तव्य में सभी अतिथियों का स्वागत किया औरश्री उत्सव के उद्देश्यों से सभी को अवगत कराया।दोनों अतिथियों ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने, अपने कौशल को पहचानने तथा उद्यमिता के माध्यम से सशक्त बनने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथ महिला मंडल गंगा शहर की मंत्री रेखा चौरडिया द्वारा किया गया।

वार्षिक साधारण सभा का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर। तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर की सत्र 2025 -27 की प्रथम वार्षिक साधारण सभा अध्यक्षा महिमा पटावरी की अध्यक्षता में की गई। उन्होंने स्वागत व्यक्तव्य दिया।अभातेममं सह मंत्री मधु कटारिया ने अखिल भारतीय द्वारा ऑनलाइन चलने वाले कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए उनसे अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने का आह्वान किया। मंत्री सरिता छाजेड़ ने वर्ष 2025-26 में हुए कार्यक्रमों और गतिविधियों को मंत्री प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया जिसे सदन ने पारित किया । कन्या मंडल संयोजिका खुशी मांडोत ने वर्ष 2025 26 में हुई कन्या मंडल की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। कोषाध्यक्ष मंजू भंसाली ने वर्ष 2025– 26 में हुए आय व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका मंजू लुणिया एवं आभार ज्ञापन कार्यकारिणी सदस्य मनीषा घोषल ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 का आयोजन

चिकमंगलूर। अणुव्रत समिति चिकमंगलूर द्वारा, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 का आयोजन विजयपुरा, चिकमंगलूर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज की प्राचार्या तेजस्वी एवं श्रुति मैडम की उपस्थिति में हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों को 'हमारी ताकत, हमारा परिवार' विषय पर प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए पारिवारिक मूल्यों, नैतिक जीवन एवं संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने चित्रकला (Drawing) एवं निबंध लेखन (Essay Writing) प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। पाँच विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति चिकमंगलूर की अध्यक्षा मंजूबाई भंसाली, मंत्री गौतम आच्छा तथा कार्यकर्ता सरोजाबाई उपस्थित थे।

संबोधि

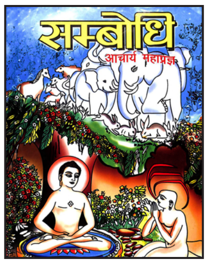

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

'न साम्येन विना ध्यानं, न ध्यानेन विना च तत्।
निष्कम्पं जायते तस्माद्, द्वयमन्योन्यकारणम्॥'

'समता के बिना ध्यान नहीं है और ध्यान के अभाव में समता नहीं है। दोनों स्थिरता का संपादन करते हैं, इसलिए वे एक-दूसरे से संयुक्त हैं।'

महावीर ने कहा है— '**समया धम्ममुदाहरे मुणी**' अर्थात् धर्म समता में है। आचार्य शुभचन्द्र कहते हैं—

'साम्यमेव परं ध्यानं, प्रणीतं विश्वदर्शिभिः।
तस्यैव व्यक्तये नूनं, मन्येऽयं शास्त्रविस्तरः॥'

समता ही परम ध्यान है, तत्त्वद्रष्टाओं ने ऐसा प्रणयन किया है। समस्त शास्त्रों का यह विस्तार उसी समता की अभिव्यक्ति के लिए है, ऐसा मेरा विश्वास है। आगे कहते हैं— 'सूक्ष्म, स्थूल, चेतन और अचेतन पदार्थों पर क्षण-क्षण में राग या द्वेष करने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक कैसे हो सकता है?

आत्मा को समता से इस प्रकार भावित कर कि राग-द्वेष से वह किसी भी पदार्थ को ग्रहण न करे।'

बुद्ध के साथ आनंद थे। मार्ग में प्यास लगी। बुद्ध ने कहा, 'पानी लाओ। नदी दूर थी। आनंद पानी लाने गए। अभी-अभी गाड़ियों के निकलने से पानी गंदला हो गया था, पीने जैसा नहीं था। वापस लौटे और कहा, 'पानी गंदा है। बुद्ध ने कहा, 'अब फिर जाओ, गंदा हो तो थोड़ी देर रुक जाना।' आनंद गया। थोड़ी देर रुका। देखा, पानी बिल्कुल स्वच्छ है। गाड़ियों के निकलने से गंदगी ऊपर आई थी। पानी लेकर लौटा और कहा, 'आज आपने एक सूत्र दे दिया। मेरे चित्त की भी यही स्थिति है। विचारों की गाड़ियां निकलती रहती हैं। विचारों को शांत करने से सत्य उपलब्ध हो जाता है।

ध्यानसाधक ध्यान और समता के पारस्परिक गहन संबंध को विस्मृत न करे। ध्येय की पूर्ति में दोनों अभिन्न सहयोगी हैं।

ध्यान योग्य आसन

ध्यान की अपरिपक्व स्थिति में आसन और मुद्राओं का भी अपना महत्त्व है। वे चित्त की एकाग्रता का संपादन करने में सहयोगी हैं। इसलिए *इन्हें* सभी ने अपनाया है। ध्यान सिद्धि के अनन्तर इनका कोई उपयोग नहीं रहता। फिर चाहे जैसी स्थिति में बैठे, सोये, खड़े रहे या चले।

आसनों में ध्यान योग्य आसन पद्मासन, सिद्धासन, वज्रासन आदि सामान्यतया प्रचलित रहे हैं। मुद्राओं में बायीं हथेली पर *दाहिनी* हथेली को गोद में रखना, तथा ज्ञानमुद्रा अंगूठे और तर्जनी अंगुली के सिरों का स्पर्श, बाकी तीन अंगुलियां खुली, हाथ घुटनों पर रखना।

आसन और मुद्रा का ध्येय यह रहा है कि साधना काल में जो ऊर्जा का प्रवाह प्रवाहित होता है, वह बाहर प्रवाहित न हो। वह शरीर की विशेष स्थिति बन जाने के कारण भीतर-ही-भीतर या विशेष आकृति में निर्मित होकर साधक को शक्ति प्रदान करती रहे, व्यर्थ न जाए। चित्त की चंचलता को भी मुद्राएं नियमित करती हैं। शान्त और अशान्त स्थिति में हाव-भाव बदल जाते हैं। यह यत्किंचित् सबका अनुभव है। हम अपनी शान्त स्थिति के लिए उस आकृति को अपनाएं जिससे कि चित्त सहज तथा शीघ्र स्थिर हो जाए। चित्त को बदलने के लिए आकृति का बदलना जरूरी है।

आज वैज्ञानिक भी इस बात से राजी हैं कि मन की भावना का शरीर के साथ बड़ा संबंध है। जेम्स और *लैंगे, अमेरिका के दो विचारकों ने इस पर गहरा काम किया है। उनका सिद्धांत 'जेम्स-लैंगे*' के नाम से प्रसिद्ध है। भयभीत आदमी भागता है, यह हम सबका अनुभव है। किन्तु वे कहते हैं—भाग रहा है, इसलिए डर रहा है। अगर ठहर जाए तो भय भी न रहे। शरीर और मन जुड़े हैं। दोनों में से एक भी स्थिर और शांत हो तो स्थिति में परिवर्तन निश्चित आ जाता है। आसनों का यथोचित उपयोग कर ध्येय की साधना ही साधक का कर्त्तव्य है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय

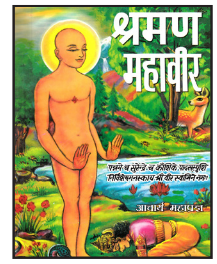

इस पद-पद्धति को पढ़कर अद्वैतवादी कहेगा— 'महावीर अद्वैतवादी थे।' जैन दर्शन का विद्यार्थी उलझ जाएगा कि 'महावीर द्वैतवादी थे, फिर उन्होंने अद्वैत की भाषा का प्रयोग कैसे किया?' महावीर इन दोनों से ही दूर हैं, वे अस्तित्ववादी हैं। अद्वैत और द्वैत—दोनों अस्तित्व से निकलते हैं, इसलिए अस्तित्ववादी कभी अद्वैत की भाषा में बोल जाता है और कभी द्वैत की भाषा में। 'होने' की अनुभूति में जो एकात्मकता है, वह 'कुछ होने' की अनुभूति में नहीं हो सकती। 'कुछ होने' का अर्थ भेदानुभूति है। उसमें हिंसा का संस्कार क्षीण नहीं होता। अपनी हिंसा कोई नहीं चाहता। यदि कोई आत्मा मुझसे भिन्न नहीं है, तो मैं किसे मारूँगा? अस्तित्व के धरातल पर यह अभेदानुभूति है; यही है अहिंसा। आत्मा ही हिंसा है और आत्मा ही अहिंसा है। आत्मा-आत्मा के बीच जो भेदानुभूति है, वह हिंसा है और आत्मा-आत्मा के बीच जो अभेदानुभूति है, वह अहिंसा है। जहाँ केवल 'होना' है, वहाँ भेद और अभेद की भाषा नहीं है। यह भाषा उस जगत् की है, जहाँ 'कुछ होना' ही सत्य है। व्यक्तित्व के जगत् में महावीर का तर्क दूसरा है। वे कहते हैं— 'किसी प्राणी को मत मारो।'

महावीर का युग यज्ञ का युग था। उस युग के ब्राह्मण यज्ञ की हिंसा का मुक्त समर्थन करते थे। उनका सिद्धान्त था कि धर्म के लिए किया जाने वाला प्राणी का हनन निर्दोष है। इस प्रकार की हिंसा का उन्मूलन करने के लिए भगवान् ने आत्म-तुला की भाषा का प्रयोग किया। भगवान् ने उनसे कहा— 'मैं आप सबसे पूछना चाहता हूँ कि आपको सुख अप्रिय है या दुःख अप्रिय है?'

उन्होंने नहीं कहा कि सुख अप्रिय है। यह प्रत्यक्ष विरुद्ध बात वे कैसे कहते? उन्होंने कहा— 'हमें दुःख अप्रिय है।' तब भगवान् ने कहा— 'जैसे आपको दुःख अप्रिय है, वैसे ही दूसरे प्राणियों को दुःख अप्रिय है। प्राण का हरण दुनिया में सबसे बड़ा भय है। फिर आप लोग हिंसा को अहिंसा का जामा कैसे पहनाते हैं? धर्म के नाम पर हिंसा का समर्थन कैसे करते हैं?'

इस अद्वैत की भाषा में मारने वाला व्यक्ति मारे जाने वाले व्यक्ति से भिन्न है। व्यक्तित्व की भिन्नता होने पर भी दोनों में एक धर्म समान है—वह है दुःख की अप्रियता। इस समान धर्म की अनुभूति होने पर हिंसा की वृत्ति शांत हो जाती है।

पुराने जमाने में पंचायत समाज की प्रभावी संस्था थी। पंच का फैसला न्यायाधीश के फैसले की भांति मान्य होता था। एक व्यक्ति पर अपने पड़ोसी की भैंस चुराने का आरोप आया। मामला पंचों तक गया। पंच न्याय करने बैठे। अभियुक्त को सामने बैठा दिया। वह अभियोग स्वीकार नहीं कर रहा था। पंचों ने न्याय करने का निर्णय लिया। उन्होंने एक तवा गर्म करवाया। वह अग्निमय हो गया। पंचों ने निर्णय सुनाया कि यह गर्म तवा इसके हाथ पर रखा जाएगा। इसका हाथ नहीं जलेगा तो यह चोरी के आरोप से मुक्त समझा जाएगा और यदि इसका हाथ जल गया तो इस पर चोरी का आरोप सिद्ध हो जाएगा। अभियुक्त ने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया।

एक पंच उठा। संडासी से तवा पकड़ अभियुक्त के हाथ पर रखने लगा। उसने हाथ खींच लिया। पंच ने उसे डांटा। वह बोला, 'डांटने की कोई आवश्यकता नहीं है। पंच का हाथ तो मेरा हाथ है। पंच की संडासी तो मेरी संडासी है। पंच महोदय! आप तो चोर नहीं हैं? आप इस तवे को हाथ से उठाकर दीजिए, मेरा हाथ इसे झेलने को तैयार नहीं है।'

इस समानता के सूत्र ने निर्णय का मार्ग बदल दिया। पंच चुपचाप अपने आसन पर बैठ गया।

भगवान् महावीर ने इस समानता के सूत्र द्वारा हजारों-हजारों व्यक्तियों को जागृत किया।

भगवान् बुद्ध ने 'बहुजनहिताय' का उद्‌घोष किया। भगवान् महावीर ने 'सर्वजीवहिताय' की उद्‌घोषणा की।

गौतम ने पूछा— 'भंते! शाश्वत धर्म क्या है?'

भगवान् ने कहा— 'अहिंसा।'

'भंते! अहिंसा किनकी रक्षा के लिए है?'

'सब जीवों की रक्षा के लिए है।'

'भंते! थोड़े जीवों की हिंसा द्वारा बहुतों की रक्षा संभव है। पर सबकी रक्षा कैसे सम्भव है?'

'अहिंसा के घड़े में शत्रुता का एक भी छेद नहीं रह सकता। वह पूर्ण निश्छिद्र होकर ही समत्व के जल को धारण कर सकता है।'

(क्रमशः)

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीन पदों से उऋण होना दुःशक्य

वे सभी आभूषणों से सुसज्जित थे। जिस प्रकार बिल्ली की आंखें मूषक पर और मोर की आंखें सांप पर टिकी रहती हैं, उसी प्रकार आचार्य आषाढ़भूति का ध्यान उन बच्चों के आभूषणों पर टिका हुआ था। लोभांध बनकर निर्दयता से प्रत्येक बच्चे की हत्या कर दी और बड़ा-सा गर्त खोदकर छहों शवों को गाड़ दिया। फिर उन सभी आभूषणों को पात्र में डालकर आगे बढ़ने लगा। जब उन बच्चों के पारिवारिकजनों को असलियत पता चली, तब आचार्य आषाढ़भूति को सब धिक्कारने लगे। आचार्य आषाढ़भूति अनुताप कर रहे थे, उसी समय वह देव शिष्य विनोद के रूप में प्रकट हुआ। आचार्यवर ने कहा—'शिष्य विनोद! तुम इतने दिन कहां थे? मैंने तुम्हें कितनी बार याद किया, किन्तु तुम तो आए ही नहीं। मैं तो संयम मार्ग से भटक गया। भौतिक सुख-विलासी और धन का अभिलाषी बन गया। यदि कुछ देर पहले आ जाते तो मैं ज्ञान, दर्शन, चारित्र से भ्रष्ट नहीं होता।' तब देवरूप शिष्य ने कहा—'यह सारा मायाजाल मैंने ही रचा था। मैं दर्शन करने आ गया हूं। स्वर्ग-नरक आदि सब यथार्थ हैं। आप धर्म में दृढ़ श्रद्धा वाले बनें और अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करें।' गुरु का मन पुनः संयम में स्थिर होने लगा। शिष्य ने बहुत बड़ा योगदान दिया और अपने गुरु को गिरने से बचा लिया। फिर आचार्य आषाढ़भूति ने साधना की और अपने कर्मों को क्षय कर मोक्ष को प्राप्त कर लिया।

इस प्रकार शिष्य ने गुरु की आध्यात्मिक सेवा की। संयम में अस्थिर हुए, पथभ्रष्ट बने धर्मगुरु के मन को पुनः संयम में स्थिर कर दिया। यदि ऐसा काम कोई शिष्य कर दे तो वह अपने गुरु के उपकार से उऋण हो सकता है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अपने ग्रंथ 'पानी में मीन पियासी' में लिखा है—

ऋणमुक्त सुगुरु की उपकृति से होने का एक मात्र साधन,
जब नियति योग से आत्म धर्म से हो जाए विचलित गुरु-मन।
देकर प्रतिबोध पुनः पावन संयम के सत्पथ पर लाए,
संस्थापित कर धार्मिकता में गुरु ऋण से शिष्य मुक्ति पाए।।

उपकार एक ऐसा तत्त्व है जो आदमी को परस्पर जोड़ने वाला होता है और उसे पार लगाने वाला भी हो सकता है। उपरोक्त तीनों पदों में से माता-पिता और भर्ता मुख्यतया सांसारिक संदर्भ में उपकारी होते हैं और धर्माचार्य नितांत आध्यात्मिक उपकारी होते हैं। इनके माध्यम से शास्त्रकार ने एक मार्गदर्शन दिया है कि किसी भी उपकारी के उपकार से उऋण होना बड़ा मुश्किल काम है, परन्तु कोई अपने उपकारी की धार्मिक सेवा कर उसे धर्म में स्थापित कर दे तो उसके उपकार से उऋण हुआ जा सकता है।

तीन प्रकार का सुप्रणिधान

ठाणं में बताया गया है— **तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे।** (3/97)

सुप्रणिधान तीन प्रकार का होता है—

1. मनसुप्रणिधान
2. वचनसुप्रणिधान
3. कायसुप्रणिधान

प्रणिधान का अर्थ है एकाग्रता— एक चीज पर केन्द्रित हो जाना। दो शब्द आते हैं—एकाग्र होना और व्यग्र होना। एक बिंदु पर केन्द्रित होना, एक आलंबन पर केन्द्रित होना एकाग्र होना कहा जाता है और विविध केन्द्रों पर चले जाना, कभी यहाँ कभी वहाँ चलायमान रहने को व्यग्र होना कहा जाता है। एकाग्रता के दो प्रकार हैं—शुभ और अशुभ। शुभ एकाग्रता तीन प्रकार की होती है—मन की शुभ एकाग्रता, वचन की शुभ एकाग्रता और काया की शुभ एकाग्रता। एकाग्रता तो एक बगुले की भी हो सकती है; वह मछली के प्रति कितना एकाग्र रहता है। रात को कई बार देखते हैं कि लाइट (light) के प्रकाश में दीवारों पर छिपकली आती है और छोटे-छोटे जीव-जंतुओं, मच्छरों के लिए एकाग्र हो जाती है। संभवतः बगुले और छिपकली की एकाग्रता हिंसा के प्रति या खाने के प्रति होती है। उस एकाग्रता को शुभ एकाग्रता नहीं कहा जा सकता। जप एक ऐसा माध्यम है जिससे मन, वचन और काया तीनों की शुभ एकाग्रता एक साथ हो सकती है।

नमस्कार महामंत्र बहुत ही पवित्र और आध्यात्मिक लाभ देने वाला मंत्र है। नमस्कार महामंत्र का पहला पद है—*णमो अरहंताणं*। हमारी पूरी दुनिया में, पूरे ब्रह्माण्ड में, पूरे मनुष्य लोक में अर्हतों से बड़ा कोई आदमी नहीं है। उन अर्हतों को नमन lw

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अगस्त 2026
सप्ताह के विशेष दिन

12 अगस्त	पक्खी
14 अगस्त	भगवान सुमतिनाथ च्यवन कल्याणक
15 अगस्त	80वाँ स्वतंत्रता दिवस

चित्त समाधि शिविर: 50+ के लिए एक विशेष उपलब्धि

लाडनूं।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में चल रहे योगक्षेम के अंतर्गत जैन विश्व भारती, द्वारा आयोजित समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं के लिए 'चित्त समाधि शिविर' का आयोजन किया गया है। आयोजकों यह शिविर विशेष रूप से 50 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके श्रावक-श्राविकाओं के लिए है। आधुनिक जीवन की भाग-दौड़ के बीच मन को शांति, संयम और समाधि की ओर ले जाने के उद्देश्य से यह पहल की गई है।

शिविर की विशेषताएं:

आध्यात्मिक बोध- जैन दर्शन-आचरण, जीवन विज्ञान, आत्म जागरण एवं अनुप्रेक्षा की गहन कक्षाएं

योग एवं ध्यान- प्रेक्षा ध्यान व योग के माध्यम से तन-मन की शुद्धि

जीवनशैली प्रशिक्ष- खान-पान में संयम, स्वावलंबन, अनुशासन, विवाद रहित जीवन के सूत्र

विशेषज्ञ सत्र- उपलब्ध वक्ताओं द्वारा कार्यशालाएं एवं संवाद

पूज्य गुरुदेव एवं लगभग 500 संयमी साधु-साध्वियों के दर्शन-सेवा का दुर्लभ अवसर हमें प्राप्त होगा। शिविर 6 दिवसीय आवासीय होगा और सोमवार से शनिवार तक चलेगा। मात्र 700 शुल्क में सुबह-शाम का भोजन, चाय-नाश्ता एवं रहने की व्यवस्था रखी गई है। भारत एवं विदेशों से इच्छुक श्रावक-श्राविका समण संस्कृति संकाय की वेबसाइट/लिंक के माध्यम से ऑनलाइन फॉर्म भरकर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। आयोजकों ने सभी को इस शिविर का प्रचार-प्रसार किया है कि वे इस योगक्षेम वर्ष का विशेष लाभ लें और गुरुदर्शन व गोचरी सेवा का लाभ अवश्य प्राप्त करें। रजिस्ट्रेशन के लिए समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती, लाडनूं में संपर्क करें।

बुद्धि और संस्कार का समन्वय अध्यात्म है

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ धर्मसंघ के बुद्धिजीवियों और पेशेवरों के संगठन 'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम' (टीपीएफ) का स्थापना दिवस समारोह रोहिणी स्थित तेरापंथ भवन में गरिमापूर्ण तरीके से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने पावन सान्निध्य और प्रेरक उद्बोधन से उपस्थित सदस्यों का मार्गदर्शन किया।

सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा-'टीपीएफ धर्मसंघ के प्रबुद्ध जनों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संगठन है और समाज में बुद्धिजीवी वर्ग नेत्रों के समान होता है, जो सबको सही दिशा दिखाता है। आप सभी अपने-अपने क्षेत्रों में सफल हैं, लेकिन जब बुद्धि के साथ संस्कार और अध्यात्म का समन्वय होता है, तभी वह प्रज्ञा बनती है।

आप अपनी शिक्षा और व्यावसायिक कौशल का उपयोग केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न रखें, बल्कि इसे धर्मसंघ की प्रभावना, नैतिक मूल्यों की स्थापना और समाज की सेवा का माध्यम बनाएं।'

इस अवसर पर टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरडिया ने स्वागत भाषण दिया एवं पूनम सुराणा आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे और संगठन के लक्ष्यों पर चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन गौतम डूंगरवाल ने किया।

सेवा कार्यक्रम

मदुरै। करपैयूरानी स्थित अप्पर हायर सेकेंडरी स्कूल में बुधवार को सेवा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत 350 से अधिक विद्यार्थियों को निःशुल्क स्कूल बैग वितरित किए गए। इस अवसर पर मदुरै तेरापंथ सभा के वरिष्ठ सलाहकार एवं तेरापंथ ट्रस्ट के ट्रस्टी विजयसिंह भटेरा ने अपने सुपुत्र हर्ष भटेरा एवं सूरज भटेरा के साथ विद्यार्थियों को स्कूल बैग प्रदान किए। जानकारी मदुरै तेरापंथ सभा के निवृत्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला जैन ने प्रदान की।

श्री उत्सव–2026 का हुआ भव्य एवं सफल आयोजन

कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के मार्गदर्शन में सॉल्टलेक महिला मंडल, कोलकाता द्वारा प्रथम 'श्री उत्सव–2026' का भव्य एवं सफल आयोजन बैंक्वेट, साल्टलेक, कोलकाता में संपन्न हुआ। यह आयोजन नारी सशक्तिकरण, महिला उद्यमिता एवं संगठन के चार आयामों को जन-जन तक पहुँचाने का एक प्रेरणादायी प्रयास रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अमिताभ दसानी (Director, Dassani Film Studio एवं Director-In-Charge, JITO Kolkata Chapter) तथा विशिष्ट रिचा शर्मा (Mrs. India International विजेता, अभिनेत्री एवं मॉडल) रहीं। सम्माननीय अतिथियों में श्री नागराज जी बरमेचा (ट्रस्टी, महासभा), जयसिंह डागा (अध्यक्ष, सॉल्टलेक सभा), नेहा डागा, प्रदर्शनी में महिला मंडल स्टॉल सहित कुल 50 स्टॉल लगाए गए। तेरापंथ महिला मंडलों का यह आयोजन नारी शक्ति का सशक्त उदाहरण है।' विशिष्ट अतिथि रिचा शर्मा ने महिलाओं के आत्मविश्वास, प्रतिभा एवं स्वावलंबन की सराहना करते हुए उन्हें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वहीं विश्वम्भर जी नेवर ने कहा, 'तेरापंथ समाज की महिलाओं ने अपनी परम्पराओं को अक्षुण्ण रखते हुए आधुनिकता को भी सुंदर रूप से अपनाया है। कार्यक्रम में सॉल्टलेक महिला मंडल की अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। दो दिवसीय इस भव्य आयोजन में लगभग 900 आगंतुकों ने सहभागिता की।

'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' भक्ति संध्या

गुवाहाटी। प्रेक्षा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 107वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' भक्ति संध्या का भव्य आयोजन आचार्य महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी (कालू) एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के पावन सान्निध्य में हुआ। सभा अध्यक्ष रितेश खटेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए महाप्रज्ञ जी के जीवन-दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अपने मंगल उद्बोधन में मुनि आनंद कुमार जी (कालू) ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ केवल एक संत नहीं, बल्कि विचार-क्रांति के महानायक, प्रेक्षा ध्यान के प्रवर्तक, अणुव्रत के प्रखर संवाहक और मानवता के मार्गदर्शक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन संयम, साधना, करुणा, अहिंसा, नैतिकता एवं वैज्ञानिक अध्यात्म का जीवंत संदेश रहा। महाप्रज्ञ जी ने धर्म को केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत किया। समाज में बढ़ती हिंसा, तनाव में महाप्रज्ञ जी के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं।

अणुव्रत की गूँज

दिल्ली।

जैन भारती मृगावती में गरिमापूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति ट्रस्टी दिल्ली को विशेष आमंत्रित किया गया। विद्यालय परिवार की ओर से अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के सभी अतिथियों का पौधा भेंट कर स्वागत एवं सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकगण को अणुव्रत के विषय में जानकारी दी एवं अणुव्रत की गतिविधियों के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी।

विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली की ओर विद्यालय प्रधानाचार्य का अणुव्रत पटका व अणुव्रत आचार संहिता मोमेंटो भेंट कर स्वागत किया गया। अंत में विद्यालय प्रशासन ने अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली की टीम का आभार व्यक्त किया। ज्ञातव्य है कि गत वर्ष आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में इस विद्यालय के 1050 विद्यार्थियों ने भाग लेकर राष्ट्रीय स्तर पर उपस्थिति में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में स्कूल प्रशासन के अतिरिक्त पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज बरमेचा, सहमंत्री प्रवीण बैद, प्रचार-प्रसार मंत्री दिनेश शर्मा, अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 की दिल्ली संयोजिका संगीता अंचलिया, कार्यसमिति सदस्य सुशील बैंगानी, सौरभ, जैन, पीयूष डागा एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रखर प्रतिभा व अन्तरप्रज्ञा के विलक्षण थे- आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजुयशा जी के पावन सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की 107 वीं जन्मजयन्ती "प्रज्ञा दिवस" कि रूप में बड़े उत्साह पूर्वक मनाया।

तेयुप के अध्यक्ष चिराग बैंगानी नि अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए अपनी टीम के साथ सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी श्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा- येक्षव शासन एक गौरवशाली शासन है। इसकी यशस्वी आचार्य परम्परा में दसवे आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी हुए। उनका जीवन विलक्षण विशेषताओं का अद्‌भुत संगम था। अप्पने अपनी पवित्र प्रज्ञा द्वारा अनेक प्रगति के द्वार उद्घाटित किए। एक छोटे से गांव टमकोर में तोलारामजी के प्रांगण में माता बालुजी की कुक्षी से खुले आकाश में एक भव्यात्माका अवतरण अवतरण हुआ हुआ । १० वर्षकी वर्ष अल्पायु में पूज्य कालुगणी के चरणों में दीक्षित हो समर्पित होगारी और भाग्य से मुनि तुलमी से शिक्षा प्राप्त कर एक साधारण से असाधारण तक पहुंच गए। विनय समर्पण, अनुशासनबद्धता, प्रबल पुरुषार्थ, गुरु के इंगित यकार के अनुसार चलते हुए नत्यु से मुनि नथमल, नथमल से महायज्ञ एवं महाप्रज्ञ से युवाचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाप्रज्ञ बन गए। अनेक विषयों का तथा अनेक दर्शनों दार्शनिक बने। कोई विषय आपसे अधुता नहीं रहा। आपने बर्षो तक ध्यान की साधना महायोगी बने।

आगम संपादन का दुरुह कार्य हाथ में लेकर अपनी लेखने से कुशल संपादन किया। अनेक ग्रंथों की रचना कर आप एकुकुशल साहित्यकार बने।

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

शास्त्रीनगर, दिल्ली

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के पावन सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 30वां महाप्राण दिवस एवं तेरापंथ सभा शास्त्री नगर का शपथ ग्रहण समारोह अत्यंत गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने कहा -आचार्य तुलसी ने तेरापंथ को एक लघु संप्रदाय के स्वरूप से उठाकर लोकप्रिय धर्मसंघ के रूप में स्थापित किया। उन्होंने युग की आवश्यकता और समय की मांग के अनुरूप धर्मसंघ में अपेक्षित संशोधनों व परिवर्तनों को सहर्ष अंगीकार किया।' मुनिश्री ने उन्हें एक 'प्रेरणास्रोत आचार्य' के रूप में अभिहित करते हुए कहा कि वे अपने प्रत्येक शिष्य की योग्यताओं को निखारने, प्रेरणा देने तथा उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने में सदैव तत्पर रहते थे। इसी क्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजा कोठारी ने जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ से शपथ ग्रहण की।

सिरियारी

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में आचार्य गणाधिपति तुलसी का 30 वां महाप्राण दिवस शासन श्री मुनि श्री मुनिव्रत स्वामी के सान्निध्य एवम् मुनिश्री चैतन्य कुमार ' अमन' के निर्देशन में मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में नमस्कार- महामंत्र के उच्चारण के पश्चात् जप का प्रयोग किया गया। इस अवसर पर उपस्थित संस्थान परिवार में कार्यरत स्टाफ परिवार को सम्बोधित करते हुए मुनि अमन ने कहा- आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। वे एक धर्म सम्प्रदाय के आचार्य अवश्य थे किन्तु उनके कार्य मानव जाति के हितों से जुड़े हुएथे । अणुव्रत-प्रेक्षा ध्यान - जीवन विज्ञान जैसे अवदान मानव कल्याणकारी है। गरीब की झोपड़ी से लेकर राजनेता तक उन्होंने अपना सन्देश दिया। कहा जा सकता है कि गरीबों- असहायों के मसीहा बनकर आए। मुनि अमन ने आगे कहा- आचार्य तुलसी महानव्यक्ति मर करभी अमरत्व का सन्देश देते रहते है। उनके 30वें महाप्राण दिवस पर समस्त समाधि स्थल परिवार से उनको भावभीनी श्रद्धा-जंलि अर्पित करते हुए गौरव की अनुभूति करते हैं। कामना करते है वह तुलसी युग पुनः लौटकर आए ताकि मानव जाति को कल्याण मार्ग मिलता रहे। इस अवसर पर मुनि गिरीश कुमार जी गुरुदेव तुलसी की स्मृति करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।अखिल भारतीय तेरापंथ युवक पारिषद से रोशन नाहर ने प्रस्तुति दी।

जयपुर

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्राण दिवस के अवसर पर मुनि सुधाकर जी एवं सहवर्ती मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के द्वारा तेरापंथ भवन, विद्याधर नगर में सामूहिक धम्म जागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता कर आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण किया। अपने प्रेरक उद्बोधन में मुनि सुधाकर जी ने कहा कि 'आचार्य श्री तुलसी का संपूर्ण जीवन धर्म, अनुशासन, नैतिकता और मानव कल्याण को समर्पित था। उनके द्वारा स्थापित जीवन-मूल्य आज भी समाज को सही दिशा प्रदान कर रहे हैं। तेयुप जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने बताया कि कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक प्रदीप बाफना एवं सहसंयोजक मनीष चोरड़िया का श्रम उल्लेखनीय रहा।

नागपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में नागपुर तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्राण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में मनाया गया। । तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू ने अपने वक्तव्य में कहा की आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को धर्म, मानवता और राष्ट्र के उत्थान के लिए समर्पित किया। यह केवल स्मरण का दिन नहीं आत्मचिंतन आत्म मंथन और संकल्प का दिन है। आज जो महिला मंडल का इतना भव्य स्वरूप है वह उन्हीं की दूरदर्शिता थी। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सुमन मालू ने सभी बहनों को कहा हमें अपने कषायो का विसर्जन करना चाहिए।

हैदराबाद

ज्ञानशाला जनक आचार्य श्री तुलसी के महाप्राण दिवस पर ज्ञानशाला परिवार द्वारा श्रद्धायुक्त भावांजलि अर्पित की गई। गणाधिपति तुलसी की 30 वीं पुण्यतिथि को देश भर में विसर्जन दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में चलने वाली ज्ञानशाला ने महातपस्वी शांतिदूत युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य मुनि दीपकुमार जी आदि ठाणा-2 की पावन सन्निधि में गुरुदेव तुलसी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मुनिद्वय ने भी प्रेरक उद्बोधन देते हुए ज्ञानशाला के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। मुनिश्री ने कहा ज्ञानशाला आज के युग की आवश्यकता है।इसे प्राथमिकता देना बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए प्रत्येक अभिभावक का लक्ष्य होना चाहिए। मुनिश्री ने कहा पूरे शेषकाल में मैने अनुभव किया हैदराबाद ज्ञानशाला जागरूक कर्मठ और समर्पित है। काव्य मुनि ने सुंदर गीतिका से परिषद को मंत्र मुग्ध कर दिया। क्षेत्रीय संयोजक संगीत गोलछा ने स्वागत करते हुए तुलसीगणी के प्रति अपने भावसुमन कविता पाठ द्वारा अपने व्यक्त किए।आंचलिक संयोजक सरोज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरूदेव तुलसी के महान अवदानों का स्मरण करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की।

कांदिवली

आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी का 107 वां जन्मदिवस(प्रज्ञा दिवस) व मासखमण तप अभिनन्दन समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन कांदिवली में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र संघान से किया गया। मंगलाचरण पलक हिरण ने गीत'जय महाप्रज्ञ गुरूवर की' के द्वारा किया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष मिठालाल धाकड़ ने किया। साध्वी प्रीयंवदा जी ने श्रावक समाज को अपने उद्बोधन में कहा - आचार्य महाप्रज्ञ महान दार्शनिक थे,मंजू हिरण की आज 29 दिन की तपस्या है। मंजू हिरण केवल कर्म निर्जरा के लिए तपस्या कर रही हैं।कर्म निर्जरा एक बहुत बड़ा माध्यम है। भगवान ने बहुत बड़ी बात कही है कर्म निर्जरा और मंजू जी उसका अनुकरण कर रही हैं।मंजू जी ने बहुत अच्छा साहस दिखाया है। साध्वी श्रीजी ने तपस्वी बहन को मासखमण तप का प्रत्याख्यान करवाया। साध्वी मृदुयशा जी व साध्वी प्रेरणा श्री जी ने गितिका के द्वारा अभिनन्दन किया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने फाउण्डेशन की तरफ से सभी पदाधिकारियों का स्वागत किया व तपस्वी बहन के तप की अनुमोदना की। उपासक प्रकाश हिरण ने अपने भाव व्यक्त किये। कांदिवली महिला मंडल ने गितिका 'मंगल,मंगल,मंगल है मासखमण तप मंगल है' के द्वारा तपस्वी का अभिनन्दन किया। मालाड तेयुप अध्यक्ष सुनिल धींग ने बधाई प्रेषित की।

कांदिवली तेयुप अध्यक्ष आशीष श्रीमाल ने अपने वक्तव्य द्वारा तपस्वी बहन के तप की अनुमोदना की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी ने तपस्वी के तप की अनुमोदना की तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जन्मदिवस की बधाई दी व युवाओं से कहा की हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। तेरापंथी सभा,तेयुप व महिला मंडल कांदिवली के पदाधिकारियों की गरिमा मय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन साध्वी प्रेरणा श्रीजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्त चाप परीक्षण शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के समीप श्री शक्ति देवी करुमारम्मा देवस्थान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रक्त चाप, मधुमेह जैसे विभिन्न जांच की गई। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, लगभग तीन घण्टे तक चले शिविर में 88 सदस्य लाभान्वित हुए। सभी सदस्यों को एटीडीसी में पधारकर निःशुल्क लिपिड प्रोफाइल करवाने हेतु कूपन वितरित किये गए। तेयुप सदस्यों द्वारा उपस्थित जन मानस को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं, चिकित्सकों की उपलब्धता, फिजियोथेरेपी, स्कैनिंग अन्य विभिन्न सेवाओं के बारे में स्थानीय लोगों को जानकारी प्रदान की गई। स्थानीय लोगों ने मानव सेवा की इस उपक्रम की खूब सराहना की और परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया।

निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर

रायसिंहनगर। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद से तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF), रायसिंहनगर द्वारा 'मिशन दृष्टि 2026' के अंतर्गत निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रायसिंहनगर मे किया गया। परम संत शाह मस्ताना चैरिटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल के डॉ पोखरचंद एवम उनकी टीम द्वारा नेत्र परीक्षण का कार्य किया गया। इस सेवा अभियान के अंतर्गत लगभग 300 से अधिक विद्यार्थियों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण किया गया।

मिशन दृष्टि के अंतर्गत मेगा नेत्र जांच अभियान का आयोजन

बेंगलुरु। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) बेंगलुरु वेस्ट द्वारा राष्ट्रीय अभियान 'मिशन दृष्टि' के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों में विशाल नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। अभियान का भव्य शुभारंभ सिद्धगंगा स्कूल के ऑडिटोरियम में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में हुआ।

मुनिश्री ने बच्चो को टीवी मोबाइल कम देखने और फिजिकल एक्टिविटी ज्यादा करने को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर विभिन्न तेरापंथ सभाओं एवं संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

टीपीएफ साउथ ज़ोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी, अनुव्रत विश्व भारती के संगठन मंत्री राजेश चावत, विजयनगर सभा अध्यक्ष भंवरलाल मांडोत, अणुव्रत विजयनगर अध्यक्ष महेंद्र टेबा की विशेष उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

वार्षिक साधारण सभा का आयोजन

हैदराबाद। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद की अध्यक्ष नमिता सिंघी ने आगंतुक सभी सदस्य बहनों का स्वागत किया व बडे ही कलात्मक ढंग से नवरत्नों से से उपमित कर पदाधिकारियों का मोमेंटों द्वारा उत्साहवर्धक किया। इस एक वर्ष में जिन जिन बहनों का सहयोग प्राप्त हुआ उनके प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की। मंत्री निशा सेठिया ने गत मिनिट्स का वाचन किया व मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया,कोषाध्यक्ष शीतल सांखला द्वारा वर्षभर का आय-व्यय का ब्यौरा साधारण सभा में रखा गया कार्यक्रम का सफल संचालन वर्षा बैद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री निशा सेठिया ने दिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 अगस्त - 09 अगस्त 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

श्री उत्सव–2026 का हुआ भव्य एवं सफल आयोजन

हनुमानगढ़ टाउन।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल हनुमानगढ़ टाउन द्वारा 'श्री उत्सव' का भव्य आयोजन किया गया।

श्री उत्सव का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करना, उन्हें स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करना तथा उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को एक मंच प्रदान करना रहा।

कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के हस्तनिर्मित उत्पाद, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, सजावटी सामग्री, खाद्य पदार्थ तथा रचनात्मक कलाकृतियों की आकर्षक स्टॉलें लगाई गईं। इन स्टॉलों ने आगंतुकों का विशेष ध्यान आकर्षित किया।

तेरापंथ महिला मंडल हनुमानगढ़ टाउन की अध्यक्ष संतोष बांठिया ने सभी अतिथियों एवं आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा कि महिला मंडल का उद्देश्य समाज की महिलाओं को उनकी प्रतिभा के अनुरूप अवसर उपलब्ध कराना तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रेरित करना है।

उन्होंने बताया कि श्री उत्सव के माध्यम से महिलाओं को अपनी कला, कौशल और उद्यमिता का प्रदर्शन करने का अवसर मिला है। कार्यक्रम के सफल आयोजन में महिला मंडल मंत्री डॉ दीपिका जैन, आदि ने श्रम नियोजित किया।

स्व. शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी के प्रति

● मुनि कमल कुमार ●

गिरिगढ़ की थी लाड़ली, सती सुप्रभा नाम।
शासन श्री से अलंकृत, पाया सुयश प्रकाम ॥१॥

गुरु तुलसी मुख कमल से, दीक्षा की स्वीकार।
महाप्रज्ञ महाश्रमण से, प्राप्त किया सत्कार ॥ २॥

बालू मालू साध्वियां, मात सुता सुखकार।
जिनकी सेवा से सतत, पाये शुभ संस्कार ॥ ३ ॥

कृशकाया कोमल हृदय, गुरु दृष्टि अनुसार।
करती थीं हर कार्य नित, सफल किया अवतार ॥ ४ ॥

अंत समय गुरु चरण का, मिला सुखद संयोग।
यथा शक्ति निज समय का, किया खूब उपयोग ॥ ५ ॥

हिल मिल कर रहती सदा, सबसे सद् व्यवहार।
प्राप्त करें अब शीघ्र ही, भवसागर का पार ॥ ६ ॥

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

– आचार्य श्री महाश्रमण

अपार श्रद्धा, हर्षोल्लास के बीच चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

पीतमपुरा,दिल्ली।

राजधानी दिल्ली के पीतमपुरा क्षेत्र की पावन धरा पर शुक्रवार को युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती, बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी (ठाणा-3) का मंगल चातुर्मासिक प्रवेश अत्यंत उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

'पर्यावरण विशुद्धि यात्रा' के रूप में जब यह विशाल और अनुशासित काफिला पीतमपुरा स्थित चातुर्मास स्थल पर पहुँचा, इस अवसर पर मुनि ज्योतिर्मय जी ने अपने प्रासंगिक एवं सारगर्भित विचार श्रोताओं के समक्ष रखे।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी ने अपने पावन उद्बोधन में कहा – 'यह द्विमासिक चातुर्मास हम सभी के लिए आत्म-कल्याण का एक विशेष और स्वर्णिम अवसर है।

मैं आप सभी को यही कहूंगा कि इस अवधि में अपने भीतर झांकें और अपनी त्याग व तपस्या के अर्घ्य चढ़ाएं। धर्म, संयम और साधना के मार्ग में कभी भी अपनी 'शक्ति का संगोपन' न करें।

अपनी क्षमताओं को छिपाएं नहीं, बल्कि अपनी पूर्ण ऊर्जा, भाव और सामर्थ्य के साथ आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ें।'

इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों ने मुनिश्री के अभिनंदन में अपने विचार रखें, जिनमें आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष के. एल. जैन पटावरी, जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेरापंथ सभा दिल्ली अध्यक्ष बिमल बैंगानी, तेरापंथी सभा पीतमपुरा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, ते.यु.प.दिल्ली अध्यक्ष मनीष महनोत तथा ते.यु.प. गांधीनगर से क्रांति बरड़िया आदि ने भी मुनिश्री के स्वागत में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रवेश से पूर्व पर्यावरण विशुद्धि यात्रा की भव्य रैली के सुव्यवस्थित संयोजन में अरुण सेठिया का अहम योग रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन पीतमपुरा सभा के मंत्री वीरेंद्र जैन ने किया।

पृष्ठ 3 का शेष

साहित्य ही संस्कृति की...

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार जी का वक्तव्य–

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार जी ने कहा कि परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु ने अपनी बातों को इतने तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से लिखा कि आज का आधुनिक व तार्किक मानव भी उस श्रद्धा के युग में लिखे गए साहित्य को पढ़कर नतमस्तक हो जाता है। उन्होंने अपनी अपूर्व प्रज्ञा और बुद्धि-कौशल से भगवान महावीर की वाणी के गूढ़ रहस्यों को अत्यंत सुंदर और सरल रूप में प्रस्तुत करके पूरे मानव समाज पर महान उपकार किया है।

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी का वक्तव्य–

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की अटूट आस्था के केंद्र केवल आगम थे। उनके चिंतन, दर्शन, व्यवहार और दैनिक जीवन में सदैव जिनवाणी के स्वर मुखर होते रहते थे। आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी आचार्य थे, जिन्होंने उस दौर की रूढ़ मान्यताओं, अंधविश्वासों और मिथ्या अवधारणाओं के विरुद्ध निर्भीकता से सत्य को जनता के सामने रखा

२२वां राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन– समारोह व संगानःआचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में २२वें राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन का मंचीय उपक्रम आयोजित हुआ। इसमें अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी प्रभावक प्रस्तुति दी।

बोलती किताब

3 बातें ज्ञान की

आध्यात्मिक जागृति और जीवन-दर्शन का सरल मार्ग

पूज्य आचार्य महाश्रमण जी की प्रेरणामयी वाणी पर आधारित "3 बातें ज्ञान की" जैन आगम ठाणं के तृतीय स्थान में निहित सूत्रों की सरल एवं प्रेरक व्याख्या प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक केवल दार्शनिक विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाला व्यावहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। प्रत्येक अध्याय पाठक को आत्मचिंतन, संयम और विवेकपूर्ण जीवन की ओर प्रेरित करता है।

पुस्तक में मन, वचन और काया की पवित्रता को जीवन की वास्तविक साधना का आधार बताया गया है। शुभ विचार, मधुर वाणी और श्रेष्ठ आचरण के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। ज्ञान तभी सार्थक होता है, जब वह व्यवहार में उतरकर जीवन को उत्कृष्ट बनाए।

सरल भाषा, प्रेरक उदाहरणों और आगमिक सिद्धांतों के माध्यम से प्रस्तुत यह कृति पाठकों को जीवन की चुनौतियों का विवेकपूर्ण समाधान खोजने की प्रेरणा देती है। इसमें आध्यात्मिकता को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर, दैनिक जीवन के प्रत्येक कर्म से जोड़ने का प्रयास किया गया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

"3 बातें ज्ञान की" प्रत्येक जिज्ञासु, साधक और अध्ययनशील पाठक के लिए एक प्रेरणादायी ग्रंथ है। यह पुस्तक आत्मजागरण, नैतिक मूल्यों, सेवा, संयम और सतत आत्मविकास का संदेश देती है। जो व्यक्ति जीवन में आंतरिक शांति, सकारात्मक सोच और सही दृष्टिकोण विकसित करना चाहता है, उसके लिए यह पुस्तक एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

"3 बातें ज्ञान की" केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करने वाली पुस्तक है। इसमें ज्ञान को आत्मजागरण, संयम और सदाचार का आधार बताया गया है। पुस्तक के प्रत्येक प्रसंग में यह संदेश मिलता है कि सच्चा ज्ञान वही है, जो व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और चरित्र में सकारात्मक परिवर्तन लाए तथा उसे स्वयं के साथ समाज के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ाए।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

पृष्ठ 14 का शेष

पाप का हिसाब...

२. शांत सहवास व स्वाध्याय : साधक चाहे बड़े समुदाय में रहे या एकांत में, समता, तप और सेवा बनी रहनी चाहिए।

३. ज्ञानी का परम कर्तव्य : जिसके पास ज्ञान है, वह उसे दूसरों को बांटे। ज्ञानी और शांतचित्त व्यक्ति जब अध्यापन में समय लगाता है तो समाज का भारी कल्याण होता है। प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का जप भी कराया।

शासन श्री साध्वी सुप्रभा जी को दी गई भावांजलि–

मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में २३ जुलाई को देवलोकगमन हुईं शासन श्री साध्वीश्री सुप्रभाजी की स्मृति सभा आयोजित हुई।

आचार्यश्री का पाथेय–

पूज्य प्रवर ने साध्वीश्री जी का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रदान करते हुए उनकी आत्मा के आध्यात्मिक कल्याण की मंगल कामना की। इसके पश्चात् चतुर्विध धर्मसंघ ने चार 'लोगस्स' का ध्यान किया।

धर्मसंघीय व पारिवारिक अभिव्यक्तियां : मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी, शासन गौरव साध्वी राजीमती जी आदि ने अपनी भावांजलि दी।

कोई अपमान का ज़हर भी घोले... तो आप शांति का घूंट पी जाइए! : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि केशी-गौतम संवाद से समझाया समता का मर्म; पूज्य प्रवर का संदेश—'न तारीफ सुनकर हवा में उड़ें, न इंकार मिलने पर सुलगें।'

लाडनूं।
21 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने निर्धारित विषय 'न रूष्ट हों न तुष्ट' पर चतुर्विध धर्मसंघ को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से अमृत पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि अनुकूल और प्रतिकूल—दोनों ही परिस्थितियों में मन को समभाव में रखना ही सच्चे साधक का धर्म है।

इतिहास का महान समागम : मुनि केशी और स्वामी गौतम संवाद–

१. संशयों का निवारण : निर्ग्रन्थ प्रवचन परंपरा के दो दैदीप्यमान नक्षत्र—घोर पराक्रमी कुमार श्रमण केशी और श्रुतधर ज्ञानी स्वामी गौतम के बीच आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा हुई। गौतम स्वामी से समाधान पाकर मुनि केशी के समस्त संशय छिन्न-भिन्न हो गए।

२. दो परंपराओं का विलय : इस ऐतिहासिक संवाद के पश्चात् मुनि केशी ने भगवान पार्श्वनाथ की चातुर्याम परंपरा से भगवान महावीर की पंच महाव्रतात्मक परंपरा को सहर्ष स्वीकार किया। आचार्यश्री ने इसे 'पूर्व से पश्चिम का महामिलन' बताते हुए कहा कि इससे श्रुत और शील का महान उत्कर्ष हुआ।

> सामने वाला चाहे सम्मान दे या दुत्कार... आपकी शांति और समता ही उसका सबसे बड़ा जवाब है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

३. पराक्रम और पुरुषार्थ की प्रेरणा : आचार्यश्री ने परंपरागत महापुरुषों और परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के प्रलम्बतम विहारों का स्मरण कराते हुए चारित्रात्माओं को ज्ञान, स्वाध्याय और प्रवचन के क्षेत्र में घोर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी।

जीवन दर्शन : न रुष्ट हों, न तुष्ट–

जीवन में समता धारण करने के लिए आचार्यश्री ने कड़क व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

१. समभाव का सूत्र: गोचरी या जीवन के व्यवहार में अनुकूल स्थिति आए तो अति-प्रसन्न (तुष्ट) न हों और प्रतिकूल स्थिति या इंकार मिलने पर गुस्सा (रुष्ट) न करें।

२. निंदा-प्रशंसा से परे : देने वाले की अति-प्रशंसा करना और न देने वाले की निंदा करना—दोनों से बचना चाहिए।

३.स्वाभिमान और दीनताहीनता: साधु या साधक को किसी वस्तु या भोजन के लिए दीनता नहीं दिखानी चाहिए और न ही संबंधों का हवाला देना चाहिए। स्वाभिमान के साथ सहज समता बनाए रखनी चाहिए।

आचार्य भिक्षु का दृष्टांत

आचार्य श्री ने बताया कि जब आचार्य भिक्षु विक्रम संवत 1817 में केलवा पधारे, तो उन्हें रहने के लिए कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिल रहा था। अंत में, उन्हें एक जैन मंदिर की छोटी सी 'अंधेरी ओरी' में रहना पड़ा। यह प्रसंग आने वाली कठिनाइयों और किसी भी स्थान पर संतोषपूर्वक रहकर साधना जारी रखने की निर्भीकता को दर्शाता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का अनुभव

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 2002 के गुजरात प्रवास का उल्लेख करते हुए बताया गया कि कैसे गोधरा कांड के बाद के तनावपूर्ण और संघर्षपूर्ण माहौल में भी उन्होंने शांति और मैत्री भाव बनाए रखा। उन्होंने जगन्नाथ रथ यात्रा के दौरान भी शांति स्थापित करने का प्रयास किया और विपरीत परिस्थितियों में भी समता के मार्ग पर अडिग रहे।

संसार में रहना बुरा नहीं, 'मन में संसार बसाना' दुख का कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री की अमृत देशना—उम्र बढ़ने के साथ इच्छाओं की लिस्ट छोटी करना और सरलता अपनाना ही सच्ची साधना है

लाडनूं।
22 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक अहिंसा यात्रा प्रणेता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने निर्धारित विषय 'पद्म की तरह अलिप्त रहें' को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से विवेचित करते हुए फरमाया कि दूसरों के कल्याण के लिए उपदेश देना बड़ी बात होती है। लोगों के विमोक्ष के लिए अध्यात्म का मार्ग यदि कोई साधु बताता है तो वह बहुत अच्छा काम होता है।

संसार का व्यवहार और साधु जीवन का अंतर–

१. व्यावहारिक सहयोग : व्यापारी से वस्तु, चिकित्सक से चिकित्सा, शिक्षक से शिक्षा, वकील से न्यायिक परामर्श, इंजीनियर से निर्माण व सी.ए. से ऑडिट आदि के रूप में सहयोग मिलता है तो बदले में अर्थ (धन) के रूप में सहयोग

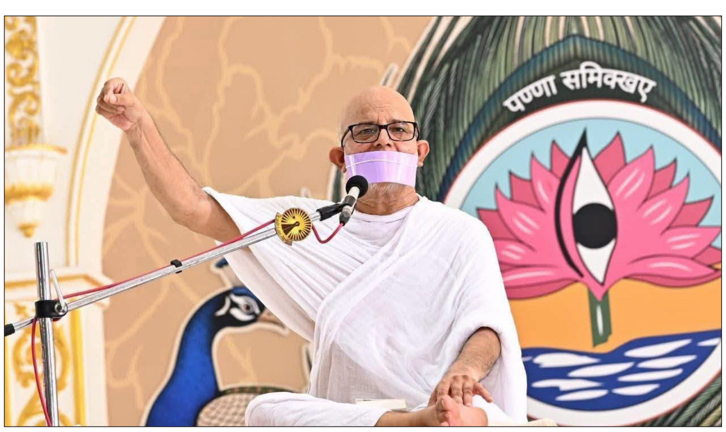

मिलता है। इस प्रकार व्यवहार में जीवन चलता है।

२. साधु का आध्यात्मिक सहयोग : साधु धर्म का उपदेश देकर, किसी को धार्मिक-आध्यात्मिक त्याग कराकर, तपस्वी को दर्शन देकर, तपस्या का प्रत्याख्यान कराकर, वृद्ध को दर्शन व मंगल पाठ सुनाकर लोगों को सहयोग प्रदान करते हैं।

मुनि जयघोष का प्रसंग और अलिप्तता का संदेश–

१. मुनि जयघोष की घटना : मुनि जयघोष गोचरी के लिए गए थे, लेकिन उन्हें भिक्षा के लिए निषेध हो गया। मनाही होने पर भी उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि जैसे पद्म जल में पैदा होने पर भी जल से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार जो कामों और विषयों में अलिप्त रहता है, वही 'ब्राह्मण-माहन' कहलाता है।

२. अपरिग्रह महाव्रत : यह साधु की अनासक्ति और अपरिग्रह की साधना है। साधु का पांचवां महाव्रत अपरिग्रह महाव्रत

> सुविधाओं का 'प्राइस टैग' होता है, आत्म-शांति का मार्ग अनमोल है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

होता है, उसे रुपये-पैसे, जमीन आदि के लेन-देन से दूर रहना चाहिए।

गृहस्थों और श्रावकों के लिए पावन दिशा-निर्देश–

१. इच्छाओं का परिसीमन : गृहस्थ को जैसे-जैसे अवसर आए परिग्रह का अल्पीकरण करना चाहिए। उम्र के साथ अपनी इच्छाओं का परिसीमन करे तथा भोग और उपभोग में संयम रखे।

२. अतिथि संविभाग व्रत : श्रावक का १२वां व्रत 'अतिथि संविभाग व्रत' है, अतः शुद्ध साधु को शुद्ध दान की भावना रखे। इन व्रतों के प्रभाव से आत्मा का उत्थान होता है।

३. सामायिक और पौषध : प्रतिदिन एक सामायिक और पौषध संयम की साधना है। पौषध में शुद्धता, जागरूकता व संयमशीलता रहनी चाहिए।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पूर्णाहूति अवसर–

स्वामीजी की विशेषता पर दृष्टिपात–

१. गोचरी और सादगी : आचार्य भिक्षु अंतिम अवस्था (सिरियारी चतुर्मास) में भी स्वयं गोचरी के लिए पधारते थे, जो उनके उच्च व्यक्तित्व को दर्शाता है।

२. कठोर मर्यादा और निर्णय : साध्वियों के वस्त्र संबंधी मर्यादा का उल्लंघन होने पर उन्होंने कठोर निर्णय लेते हुए पाँचों साध्वियों का आहार-पानी का संबंध विच्छेद कर दिया था, यह उनके अनुशासन को दर्शाता है।

३. उत्तरदायित्व सौंपना : अपनी दूरदर्शिता से उन्होंने भारमल जी को युवाचार्य का पद सौंपा ताकि संघ व्यवस्था सुचारू रहे।

पाप का हिसाब सबको देना होगा... कर्म की अदालत में चक्रवर्ती भी फ़कीर है! : आचार्यश्री महाश्रमण

समता से श्रमण होता है' विषय पर अमृत देशना—'पाप कर्म का उदय आए तो धन-दौलत भी त्राण नहीं दे सकती; समता, तप और स्वाध्याय ही आत्मा के सच्चे रक्षक

लाडनूं।
24 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में आयोजित प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में 'समता से श्रमण होता है' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को आगम वाणी के माध्यम से पावन देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि कर्म अत्यंत बलवान और निष्पक्ष होते हैं, जो किसी भी बड़े से बड़े व्यक्ति को भी नहीं छोड़ते।

कर्मवाद का अखंड सिद्धांतः न राजा बचे, न रंक–

१. निष्पक्ष है कर्म सत्ता : आचार्यश्री ने फरमाया कि आदमी जैसा पुण्य या पाप करता है, उसका फल उसे भुगतना ही पड़ता है। जब पाप कर्म का उदय आता है तो व्यक्ति को भयंकर कष्ट उठाने पड़ते हैं। उस समय धन, वैभव या सत्ता कोई त्राण (रक्षा) नहीं दे सकती।

२. अहर्निश जागरूकता : साधु हो या गृहस्थ, सभी को जागरूक रहना चाहिए कि कोई ऐसा निकृष्ट पाप कर्म न बंध जाए जो भविष्य में दुःखों का कारण बने। साधु जीवन में पांच महाव्रत, समिति और गुप्तियों में कोई दोष लगे तो तुरंत प्रायश्चित लेकर शुद्ध हो जाना चाहिए।

> तारीफ़ और ताने दोनों से परे हो जाओ... असली श्रमण वही है जो हर हाल में 'सम' रहे
> –आचार्यश्री महाश्रमण

३. पुनर्जन्म और कर्म सिद्धांत : जैन दर्शन का मुख्य आधार कर्मवाद है, जिससे पुनर्जन्म का सिद्धांत जुड़ा हुआ है। चक्रवर्ती और बड़े धर्माधिकारियों को भी अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।

जीवन दर्शन : समता से ही श्रमणता–

१. समता ही सुख की कुंजी : 'श्रमण कौन है?' का समाधान देते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि जो हर परिस्थिति में समता की साधना करता है, वही सच्चा श्रमण है। (शेष पेज 12 पर)

सम्पादकीय

संपादकीय कलम से.....

सुधर्मा सभा में गूंज उठा भिक्षु-शासन का पावन मान,
युवा-ओज संग युवा-संगठन गाता आज विजय का गान॥

लाडनूं की पावन धरा पर, आद्य अनुशास्ता भगवान भिक्षु के ०१वें बोधि दिवस एवं त्रि–जन्मशताब्दी समापन के पावन अवसर पर संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ ने एक अलौकिक इतिहास घटित होते देखा। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से जैसे ही मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी को धर्मसंघ के ९वें युवाचार्य के रूप में घोषित किया गया, वैसे ही 'सुधर्मा सभा' से लेकर सकल जैन जगत में उल्लास और ओज की नव–तरंग बह उठी। यह केवल पद का आरोहण नहीं, बल्कि 'युवा ओज' और 'भिक्षु–शासन के संकल्पों' का दिव्य संगम है। नवनियुक्त युवाचार्यप्रवर स्वयं युवा–तेज के प्रतिमान हैं। आपका अगाध विनय, कठोर संयम और अनुशासनप्रियता देश–दुनिया के युवाओं के लिए दिशा–दर्शक महा–मशाल है। गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की करुणा–धारा और आशीर्वाद के बल पर मुख्यमुनि जी के समर्पण ने आज संघ के गगन में ध्रुव–तारे सी दीप्ति पाई है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (अभातेयुप) के नेतृत्व में, देशभर की युवा–शक्ति आज एक नया संबल महसूस कर रही है। अभातेयुप का हर युवा संकल्पित है कि पूज्य गुरुदेव के पावन इंगितों और नवनियुक्त युवाचार्यप्रवर के ओजस्वी मार्गदर्शन में भिक्षु–शासन की पताका को विश्व के सर्वोच्च शिखर पर फहराएगा। आइए, इस ऐतिहासिक क्षण पर हम अपनी श्रद्धा और संकल्पबद्धता से नव–युवाचार्यप्रवर के चरणों में वंदना अर्पित करें। — पवन मांडोत (प्रधान संपादक, तेरापंथ टाइम्स)

साध्वीवृंद के लिए सीपीएस कार्यशाला के आयोजन का सौभाग्य

लाडनूं।
20 जुलाई, 2026

योगक्षेम वर्ष के पुनीत अवसर पर दिनांक 15 जुलाई से 20 जुलाई 2026 तक जैन विश्व भारती, लाडनूं में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में साध्वीवृंद के प्रशिक्षण हेतु सीपीएस कार्यशाला के आयोजन का सौभाग्य अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद को प्राप्त हुआ, जिसमें मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत एवं सह-प्रशिक्षिका बबीता रायसोनी रहे। सीपीएस दीक्षांत समारोह 20 जुलाई 2026 को साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के सान्निध्य में प्रज्ञा निलयम में आयोजित हुआ, जिसमें अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष रमेश डागा एवं अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

मुमुक्षु बहिनों के लिए सीपीएस कार्यशाला का आयोजन

लाडनूं।
20 जुलाई, 2026

योगक्षेम वर्ष के इस पुनीत अवसर पर दिनांक 14 जुलाई से 20 जुलाई 2026 तक जैन विश्व भारती, लाडनूं में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु बहिनों के प्रशिक्षण हेतु सीपीएस कार्यशाला का आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा किया गया, जिसमें मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत एवं सह-प्रशिक्षिका बबीता रायसोनी रहे।

सीपीएस दीक्षांत समारोह 20 जुलाई 2026 को मुमुक्षु निर्देशिका समणी अमलप्रज्ञाजी की सन्निधि में प्रज्ञा निलयम में आयोजित हुआ, जिसमें अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष रमेश डागा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कांटो का ताज नहीं....
(पृष्ठ 16 का शेष)

का अवसर मिला। आप मेरे लिए कितना परिश्रम करवाते थे। मेरा स्वाध्याय आदि भी सुनने की कृपा करते थे और आपकी सेवा का जो दुर्लभ अवसर मिला, वह मेरे जीवन की एक अमूल्य धरोहर है। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सेवा का अवसर मिला और परम पूज्य गुरुदेव के इतने उपकार हैं! परम पूज्य गुरुदेव ने मुझे **'मुख्य मुनि'** अलंकरण विराटनगर में प्रदान करवाया था और फिर परम पूज्य गुरुदेव ने 2016 में मुख्य मुनि पद प्रदान किया था।

पावन गुरु-छत्रछाया एवं सुदीर्घ सेवा-काल हेतु मंगल-आशीष की याचना

पूज्य गुरुदेव से मंगल आशीष की याचना करते हुए युवाचार्यश्री महावीर ने कहा कि गुरुदेव! मैं तो एक अबोध बच्चा हूं, कुछ भी नहीं जानता, किंतु यह सब महापुरुषों का, आप जैसे परम पवित्र पुरुषों की कृपा का ही प्रसाद मानता हूं कि मैं आज कुछ बोल पाता हूं, कुछ कर पाता हूं। आपने मुझे सिखाने के लिए कितने-कितने प्रशिक्षण प्रदान किए हैं और गुरुदेव! आज मैं आपसे आशीर्वाद चाहता हूं कि आपकी यह वरद् छत्रछाया मुझे सुदीर्घ काल तक मिलती रहे।

परम पूज्य भारीमालजी स्वामी, जिनका युवाचार्य काल 28 वर्ष से ज्यादा था, तो गुरुदेव! मैं भारीमालजी स्वामी के भी युवाचार्य काल को अतिक्रांत करूं और आपकी पावन छत्रछाया में निरंतर आपसे प्रेरणा-पाथेय प्राप्त करता रहूं। आपसे मैं शिक्षण प्राप्त करता रहूं, आपसे मैं निरंतर एक विद्यार्थी के रूप में सीखता रहूं—ऐसा परम पावन आशीर्वाद सदैव आप मेरे पर रखें। आपके प्रति मेरे मन में अत्यंत भक्ति का भाव है।

गुरुदेव! आपके उपकारों से मैं कभी उऋण नहीं हो सकता। मैं तो मानो एक मिट्टी-पत्थर का ढेला था, जिसे परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे महान पवित्र शिल्पकार ने कुछ गढ़ने का प्रयास किया है। गुरुदेव! आपके उपकारों से उऋण नहीं हो सकता।

'शासन माता' साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं साध्वीवृंद के वात्सल्य भाव का स्मरण

शासन माता एवं साध्वीवृंद के वात्सल्य भाव के बारे में युवाचार्यश्री ने कहा कि आज के दिन मैं शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का भी स्मरण करता हूं कि शासन माता की भी मेरे पर बहुत कृपा-दृष्टि थी। वे समय-समय पर शिक्षा भी फरमाती थीं और जब यहां शासन माता का अलंकरण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को प्रदान किया गया था और आचार्य प्रवर के लिए 'युगप्रधान' की घोषणा हुई थी, तब भी शासन माता ने मुझे कई शिक्षाएं प्रदान की थीं। मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूं। वर्तमान साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, जिनका भी मेरे जीवन पर उपकार रहा है, आपके सानिध्य में, आपके मार्गदर्शन में मैंने संघीय पाठ्यक्रम का अध्ययन किया था, आपकी निरंतर कृपा मुझ पर रही है।

साध्वीवर्याजी संबुद्धयशाजी, जो मेरे संसार-पक्ष में भगिनी जैसी हैं। सालेचा परिवार मेरा संसारपक्षीय ननिहाल पक्ष है, तो सालेचा परिवार से होने के कारण एक भगिनी की तरह इतना वात्सल्य भाव मुझे उनसे भी मिलता रहता है।

बाल्यकाल के धार्मिक संस्कार एवं पितृ-मातृ ऋण के प्रति कृतज्ञता

बाल्यकाल एवं संसारपक्षीय माता-पिता के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि गृहस्थ जीवन एवं अपने संसारपक्षीय माता-पिताजी, जो संभवतः यहीं उपस्थित है, उनके भी उपकारों को याद करता हूं कि मेरे संसार-पक्षीय पिताजी का कितना उपकार था। मुझे साधु-संतों के पास बराबर ले जाया करते थे, माताजी भी ले जाया करती थीं। पिताजी तो सब साधु-साध्वियों के पास जाकर बोलते कि इसको दीक्षा दे दो, महावीर को दीक्षा दो, महावीर को साधु बनाओ। मेरे बड़े पिताजी स्वरूपचंदजी तो मुझे **'साधुड़ा'** कहकर ही बुलाया करते थे। इस प्रकार संसारपक्षीय माता-पिता का भी मेरे पर धार्मिक संस्कार आदि की दृष्टि से बहुत बड़ा उपकार रहा है।

दीक्षा-पथ की प्रथम प्रेरणा एवं संबल देने वाली साध्वियों को नमन

युवाचार्यश्री ने दीक्षा की प्रेरणा प्रदान करने वाली साध्वियों का स्मरण करते हुए कहा कि मैं आज के दिन याद करना चाहूंगा 'शासनश्री' साध्वी रूपांजी (सरदारशहर) को। जिस समय मैं डेढ़-दो साल का बच्चा था, उस समय उन्होंने मेरे पर कितनी कृपा की। वे घर के सामने ही विराजती थीं, इसलिए उनके सान्निध्य में मुझे घंटों-घंटों तक रहने का अवसर मिला। उन्होंने गीत में भी मेरे लिए उस समय एक पंक्ति लिखी थी : **सिर पर हाथ सदा रूपांरो, खिले धर्म री...** उनका भी मैं उपकार मानता हूं। उनसे मुझे निरंतर प्रेरणा मिलती रही। उनके साथ साध्वी सरस्वतीजी आदि साध्वियां थीं, उनका भी बहुत बड़ा उपकार है। बाद में साध्वी विनयश्रीजी (द्वितीय) ने भी प्रेरणा दी, मुनिश्री मोहनलालजी स्वामी (आमेट) की भी प्रेरणा मिली। फिर साध्वी राकेश कुमारीजी का चतुर्मास फलसूंड में हुआ, उनकी मानो प्रेरणा से मैं धर्मसंघ में आगे बढ़ सका, दीक्षा ले सका, आज के दिन मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

अग्रज मुनियों की वात्सल्य-छाया के प्रति कृतज्ञता

अग्रज मुनियों के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त करते हुए युवाचार्यश्री महावीर ने कहा कि विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा मुनिश्री ऋषभ कुमारजी स्वामी, जिन्होंने मेरा एक माता की तरह लालन-पालन किया। कितना स्नेह-वात्सल्य। महाराज हमको गुरुदेव की (युवाचार्य प्रवर की) सेवा में भेज देते कि काम मैं पीछे कर लूंगा। इस प्रकार मुनिश्री ऋषभकुमारजी और मेरे अग्रणी के रूप में मुनिश्री कुमारश्रमणजी भी रहे, उनका भी बहुत उपकार है। मुनिश्री ऋषभकुमारजी के वर्ग के भी अनेक संतों का उपकार है।

मुनिश्री दिनेशकुमारजी स्वामी, जिनके पास वर्षों तक मुझे अध्ययन करने का अवसर मिला। उनके पास अनेक-अनेक आगमों आदि का विशेष अध्ययन करने का मुझे अवसर मिला, उनके प्रति भी मेरे मन में कृतज्ञता का भाव है।

चतुर्विध धर्मसंघ में मुख्यमुनि बनने के बाद से साधु-साध्वियां, श्रावक-श्राविकाएं, सबका जो वात्सल्य मिला है, जो प्रेम मिला है, जो सबकी कृपा-दृष्टि मिली है, उन सबके प्रति, चतुर्विध धर्मसंघ के प्रति भी मैं आभारी हूं।

'भैक्षव शासन' की गरिमा, निर्मल संयम एवं गुरु-आज्ञा के प्रति समर्पित बने रहने का महासंकल्प

पूज्य गुरुदेव से मंगल आशीष की याचना करते हुए युवाचार्यश्री महावीर ने कहा कि गुरुदेव! मैं आशीर्वाद चाहता हूं कि आपने जो दायित्व मुझे बख्शाया है, यह जो धवल चादर ओढ़ाई है, इसकी शान को निरंतर आगे बढ़ाता रहूं। परम पूज्य गुरुदेव! जब आप युवाचार्य पद पर आसीन हुए थे, तब आपने फरमाया था कि यह कांटों का ताज सुमनों का ताज बना रहे। गुरुदेव! मैं भी आपसे ऐसा आशीर्वाद चाहता हूं कि आपने जो मुझे एक महान दायित्व दिया है, **मेरे लिय भी यह कांटों का ताज नहीं, सुमनों का ताज बना रहे।** परम पूज्य गुरुदेव की कृपा से मैं भैक्षव गण की शान को निरंतर आगे बढ़ाता रहूं, आपका अनुशासन मुझे मिलता रहे और आपके प्रति मेरा विनय-भाव दिन-प्रतिदिन वृद्धिंगत होता रहे।

गुरुदेव। आपके मुझ पर इतने उपकार हैं! आपने इतना पढ़ाया-लिखाया है, कितना अध्ययन कराया है। उन उपकारों से मैं कभी उऋण हो नहीं सकता। **गुरुदेव! इस अवसर पर मैं आशीर्वाद चाहूंगा कि आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दें कि मैं आपके इंगित को आकार देने में समर्थ बनूं, मैं इस भैक्षव गण की, जिन शासन की गरिमा को आगे बढ़ा सकूं।**

परम पूज्य गुरुदेव! ऐसा आशीर्वाद दिलाएं कि मेरा स्वास्थ्य भी निरंतर अच्छा बना रहे और गुरुदेव की कृपा से मैं धर्मसंघ में आपके श्री चरणों में नित विकास के नए आयामों को छूता रहूं। **मैं अपने संयम-पर्यवों को दिन-प्रतिदिन निर्मल, निर्मलतर, निर्मलतम बनाता रहूं।** मेरी संयम की चादर भी निर्मलतम बनी रहे और परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से मैं हमेशा विकास के सोपानों पर चढ़ता रहूं। परम पूज्य गुरुदेव के इतने उपकारों के प्रति कृतज्ञता शब्द तो बहुत छोटा है। युवाचार्यश्री ने गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा आचार्यश्री कालूगणी की स्तुति में रचित गीत की कुछ पंक्तियों से आचार्यप्रवर से सदैव आशीर्वाद बनाए रखने की प्रार्थना की।

म्हारो नाथ नगीनो, भारी सुजश जग लीनो रे।
मोने पद युवराज नो दीन्हो रे...

युवाचार्यश्री महावीर : संक्षिप्त परिचय

जन्म	:	वि. सं. 2045 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, 19 जून 1988 फलसूण्ड (राज.)
पिता	:	श्री सवाईचंदजी कोचर
माता	:	श्रीमती छगनीदेवी कोचर
दीक्षा	:	वि.सं. 2058, फाल्गुन कृष्ण पंचमी, 3 मार्च 2002 जसोल (राज.)
श्रेष्ठ श्रुताराधारक	:	वि.सं. 2068, फाल्गुन कृष्ण नवमी, 16 फरवरी 2012 कुंचोली (राज.)
समीक्षा परिषद् सदस्य	:	वि.सं. 2069, वैशाख कृष्ण नवमी, 14 अप्रैल 2012 मजल (राज.)
मुख्यमुनि अलंकरण	:	वि.सं. 2072, अश्विन कृष्ण अष्टमी, 5 अक्टूबर 2015 विराटनगर (राज.)
अग्रणी	:	वि.सं. 2072, माघ शुक्ल सप्तमी, 17 फरवरी 2016 किशनगंज (बिहार)
मुख्यमुनि पद	:	वि.सं. 2073, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी, 4 जून 2016 बरपथार (असम)
बहुश्रुत परिषद संयोजक	:	वि.सं. 2080 वैशाख कृष्ण एकादशी, 16 अप्रैल 2023 खरोद (गुजरात)
युवाचार्य मनोनयन	:	वि.सं. 2083 आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी, 27 जुलाई 2026 लाडनूं (राज.)
शिक्षा	:	सत्पवर्षीय संघीय पाठ्यक्रम, त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए. (स्वर्णपदक), एम.ए., पी.एचडी. (विषय-जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन)
3 देश	:	भारत, नेपाल व भूटान
23 राज्य	:	राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, दमन, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, नागालैण्ड, झारखण्ड, उड़ीसा, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, पुदुचेरी, छत्तीसगढ़
यात्रा	:	लगभग 40000 किलोमीटर की पदयात्रा

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 अगस्त - 09 अगस्त 2026

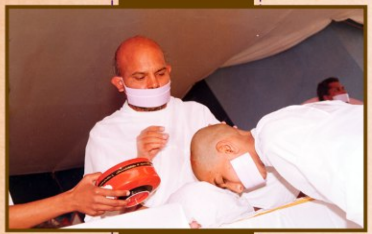

"कांटों का ताज नहीं सुमनों का ताज बना रहे..."

—युवाचार्यश्री महावीर

(कृतज्ञता, विनय और समर्पण के भावपूर्ण उद्गार)

लाडनूं, 27 जुलाई 2026— युवाचार्य पद ग्रहण करने के उपरांत नवनियुक्त युवाचार्यश्री महावीर ने अत्यंत विनम्र एवं भावपूर्ण उद्बोधन दिया। उन्होंने आद्य अनुशास्ता आचार्यश्री भिक्षु से लेकर समस्त आचार्य परंपरा को नमन करते हुए परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी के अपरिमित उपकारों का स्मरण किया।

गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा—"गुरुदेव, मैं तो एक अबोध बच्चा हूं, कुछ भी नहीं जानता, किंतु यह सब महापुरुषों का, आप जैसे परम पवित्र पुरुषों की कृपा का ही प्रसाद मानता हूं"

उन्होंने अपने गुरुद्वय, संसारपक्षीय माता-पिता, साध्वीवृंद, अग्रज संतों तथा चतुर्विध धर्मसंघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अंत में भावपूर्ण संकल्प व्यक्त किया—**"गुरुदेव आपने जो मुझे एक महान दायित्व दिया है, यह मेरे लिए कांटों का ताज नहीं, सुमनों का ताज बना रहे।"**

अनवरत प्रवाहमान आचार्य-परंपरा एवं आद्य अनुशास्ता को भाव-वंदना :

अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए युवाचार्यश्री महावीर ने कहा कि मैं परम पूज्य स्वामीजी के जन्म दिवस के पावन अवसर पर सर्वप्रथम तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्य भिक्षु के चरणों में शत-शत नमन करता हूं, अभिनंदन करता हूं, वंदन करता हूं।

परम पूज्य भगवान महावीर का यह जिन शासन और जिन शासन की यह उज्ज्वल पवित्र परंपरा, जहां तेरापंथ धर्मसंघ में परम पूज्य आचार्य भिक्षु जैसे तेजस्वी-वर्चस्वी आचार्य हुए। उन्हीं की परंपरा में आचार्यश्री भारमलजी, आचार्यश्री रायचंदजी, आचार्यश्री जीतमलजी, आचार्यश्री मघराजजी, आचार्यश्री मघवागणी, आचार्यश्री माणकगणी, आचार्यश्री डालगणी, आचार्यश्री कालूगणी और परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी —जिनकी यह जन्मधरा तेरापंथ की राजधानी है, जहां योगक्षेम वर्ष मनाया जा रहा है और जिनके साक्षात दर्शन करने का अवसर मुझे भी गृहस्थ अवस्था में मिला था। ऐसे परम उपकारी गुरुदेव तुलसी और उनके उत्तराधिकारी परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, जिनका मेरे पर बहुत बड़ा उपकार रहा है। जिन्होंने मुझे संयम प्रदान करके मेरे जीवन को एक नई दिशा प्रदान की थी। मैं एक छोटे से गांव का छोटा सा बच्चा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चरणों में उपस्थित हुआ था और उन्होंने (गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने) मेरे पर बहुत कृपा की, मेरे विकास के लिए बहुत प्रयत्न किया। मेरे अध्ययन के लिए हर दृष्टि से वे हम सबका, बच्चों का, मेरा खूब ध्यान रखते थे। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का महान उपकार है।

अनुशास्ता गुरुदेव महाश्रमणजी के अपरिमित उपकारों का भावुक स्मरण

आचार्यश्री महाश्रमणजी के उपकारों के बारे में भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि मेरे परम उपकारी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी, जिनके उपकारों से तो मैं कभी उऋण नहीं हो सकता।

दीक्षा लेते ही मुझे परम श्रद्धेय (उस समय युवाचार्य प्रवर थे) युवाचार्यश्री की सेवा में रहने का अवसर मिला और आपश्री के द्वारा मुझे बहुत कुछ सीखने

शेष पृष्ठ 15 पर...

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।